ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

सावन-भादों संवत् नानकशाही ५५४ अगस्त 2022 वर्ष १५ अंक १२

श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब,
श्री अमृतसर साहिब

गुरुद्वारा पातशाही 5वीं गुरु का बाग,
गांव घुक्केवाली, जिला श्री अमृतसर साहिब

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

सावन-भादों, संवत् नानकशाही 554
वर्ष 15 अंक 12 अगस्त 2022

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पेश नैतिक उपदेश 8
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
स्वतन्त्रता का अधिकार : हउ गोसाई दा पहिलवानड़ा 12
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
सिक्ख ढाडी संस्था : आरंभ और विकास 20
-डॉ. दिलवर सिंघ
गुरुद्वारा गुरु का बाग का मोर्चा 28
-स. मनजीत सिंघ
सन् १९४७ — सिक्ख और पंजाब का बँटवारा 33
-डॉ. किरपाल सिंघ (दिवंगत)
महान समाज सेवक : भक्त पूरन सिंघ 39
-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
बाणी बिरलउ बीचारसी 41
-डॉ. परमजीत कौर
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै . . . 45
-डॉ. मनजीत कौर
खबरनामा 49

गुरबाणी विचार

भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥
लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु ॥
जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥
पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥
छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु ॥
हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥
जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥
नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥
से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥७ ॥ *(पन्ना १३४)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में भादों महीने के प्राकृतिक अथवा भूमंडलीय वातावरण के प्रसंग में प्रभु-नाम से बिछड़े मनुष्य-मात्र की विवशता की स्थिति एवं अमूल्य मानव जीवन को व्यर्थ गंवाने के रुझान को गलत बताते हुए इस जीवन रूपी अवसर में प्रभु-नाम का सहारा लेने के लिए मार्गदर्शन करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जैसे भादों के महीने में मनुष्य बहुत घबरा जाता है (क्योंकि गर्मी के मौसम में बरसात के कारण हवा में नमी ज्यादा हो जाने से हुंमस हो जाती है), वैसे ही प्रभु मालिक के अतिरिक्त अन्य सांसारिक पदार्थों से मोह-लगाव होने से घबरा जाना स्वाभाविक है। भादों के महीने में जैसे कोई स्त्री लाख शृंगार करे तब भी वह व्यर्थ ही जाता है, इसी तरह मनुष्य-मात्र द्वारा धारण की जाने वाली बाहरी सजावट किसी काम नहीं आती अर्थात् जीवन की सफलता अर्थपूर्ण कार्य करने में है।

मृत्यु का दृष्टांत देते हुए सतिगुरु जी कथन करते हैं कि जिस दिन यह शरीर खत्म हो गया तब तुझे प्रेत कहा या समझा जाएगा। यम के दूत तुझे लेकर चल पड़ेंगे और अन्य किसी को इसका पता नहीं चलने देंगे। जब शरीर में से प्राण निकल गये तब क्षण भर में तेरे परिवार वाले तुझे छोड़ देंगे, जिनसे तूने अत्यंत लगाव बना रखा है। तब तू हाथ मलेगा। तेरा शरीर कठिन स्थिति में होगा। घबराहट से तेरा रंग काले से सफेद हो जाएगा। जैसा कोई बोता है वैसा ही काटता है। यह मातलोक, यह धरती कर्म किये जाने योग्य खेत ही तो है।

गुरु जी अंत में मार्ग बख्शिश करते हुए फरमान करते हैं कि जो मनुष्य प्रभु की शरण में आ जाते हैं प्रभु उनको नाम रूपी जहाज में बिठा लेते हैं। वे भादों महीने की नरक तुल्य स्थिति से गुरु से संबंध बनने के कारण बच जाते हैं।

संपादकीय

सिक्ख पंथ का आविर्भाव : पराधीनता से मुक्तावस्था का शुभारंभ

भारतवासियों ने हज़ारों वर्ष सामाजिक, आर्थिक, सभ्याचारक तथा धार्मिक पराधीनता अपने तन-मन पर झेली। पराधीनता का आरंभ उस समय हो गया था जब समाज को चार वर्णों में बांटा गया था। बंटा हुआ समाज कभी भी खुशियों का आनंद नहीं उठा सकता। वर्ण-विभाजन के समर्थक चाहे आज भी इसको 'आदर्श कर्म-व्यवसाय-विभाजन' कहकर इसका समर्थन करते हैं किंतु गहनता से देखने से यह भली-भांति नज़र आ जाता है कि इसके अधीन चौथे वर्ण (तथाकथित) शूद्र की हालत इतनी बुरी थी कि वह अन्य तीन वर्णों का गुलाम-मात्र ही था। भारतवासियों की इसी मानसिक गुलामी ने विदेशी हमलावरों को भारत पर कब्ज़ा करने में कोई कठिनाई न आने दी। एक-दूसरे को गुलाम बनाते हुए सभी भारतवासी विदेशी गुलामी के अंधेरे कूप में जा गिरे। विदेशी हाकिमों ने हमलावर बनकर भारतवासियों को बड़ी बेरहमी से मारा, उजाड़ा, लूटा व पीटा। वे यहां से दौलत के अंबार लूटकर अपने देश में ले जाते; भारत की बहू-बेटियों को अपने देश में मंडी लगाकर बेचते। भारतवासियों ने इन विदेशी हाकिमों की गुलामी को अपनी तकदीर ही मान लिया था। गुलामी की जंजीरों में जकड़े भारतवासियों की हालत बद से बद्तर होती चली गई। ज़ुल्म का दौर और तेज होता गया। भारतवासियों को अपने मानवीय मौलिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया। इनके इज्जत से जीने के सभी अधिकार छीन लिए गए। भारतवासियों के सिर पर पगड़ी बांधने, पालकी में तथा घोड़े पर बैठने आदि पर पाबंदी लगा दी गई। यहां तक कि इनको अपना धर्म-कर्म करने के लिए भी कई तरह के टैक्स (ज़जिया) अदा करने पड़ते थे। ये पाबंदियां दिन-ब-दिन इतनी सख़्त होती जा रही थीं कि लोग अपना धर्म छोड़कर अन्य धर्म (इसलाम धर्म) धारण करने के लिए मजबूर हो रहे थे।

लगभग डेढ़ हज़ार वर्ष की पराधीनता के बाद इस देश के लोगों को आज़ादी का सुख मिलना प्रारंभ हुआ। इसकी आधारशिला रखी श्री गुरु नानक देव जी ने। प्रसिद्ध शायर इकबाल ने इस हकीकी सच को अपनी रचना में बयान करते हुए बड़े भावपूर्ण शब्दों में कहा है— ''फिर उठी आखिर सदा, तौहीद की पंजाब से। हिंद को इक मर्द-ए-कामिल ने, जगाया ख्वाब से।'' श्री गुरु नानक देव जी ने उस समय के रजवाड़ों के विरुद्ध जोरदार आवाज़ बुलंद करते हुए कहा

था कि ''राजे सीह मुकदम कुते॥ जाइ जगाइन्हि बैठे सुते॥'' श्री गुरु अरजन देव जी ने शांतमयी ढंग से आज़ादी की लड़ाई लड़ते हुए लोगों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया। उन्होंने पूर्व गुरु साहिबान द्वारा उच्चरित एवं एकत्रित बाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में संपादित कर प्रत्येक मनुष्य-मात्र को इससे ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। ज़ालिम हुकूमत ने उनको हद दर्जे की यातनायें देकर शहीद कर दिया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने आज़ादी की लड़ाई को आगे बढ़ाते हुए आध्यात्मिकता के साथ-साथ जनता में राजनीतिक शक्ति पैदा करने के लिए मीरी-पीरी का सिद्धांत स्थापित किया; समय की सरकार के साथ टक्कर लेते हुए अनेक युद्ध किए। इन सभी युद्धों का उद्देश्य जनसाधारण को अपनी आज़ाद हस्ती के अस्तित्व का एहसास कराना भी था। नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब के समय तक हालात इतने भयावह हो गए थे कि हर किसी को धर्म परिवर्तित किये जाने को विवश किया जाने लगा था। अपने-अपने धर्म में जीने की आजादी की लड़ाई लड़ते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब को दिल्ली के चांदनी चौक में अपने प्रमुख सिक्खों सहित शहादत देनी पड़ी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की सृजना कर आज़ादी की लड़ाई को और मज़बूत किया। खालसे ने हर जुल्म का डटकर मुकाबला किया।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने आशीर्वाद देकर अपने प्रमुख सिक्खों सहित पंजाब की धरती को ज़ालिम हुकूमत से आज़ाद करवाने के लिए भेजा था। बाबा बंदा सिंघ बहादुर ने ज़ालिमों को सोधकर पंजाब की धरती पर पहली बार आज़ाद (खालसा) राज्य स्थापित किया। हमलावर चाहे फिर भी भारतवासियों को लूटने की मंशा से आते रहे किंतु पंजाब के शूरवीरों से मुंह की खाकर वापिस मुड़ते रहे। १२ मिसलों के खालसाई राज्य तथा राखी सिस्टम (सुरक्षा-प्रबंध) ने आज़ादी की चिंगारी छेड़ दी थी, जिसकी बदौलत देशवासियों का महाराजा रणजीत सिंघ के शासनाधीन पुनः अपना राज्य 'सिक्ख राज्य' कायम हुआ था। इन सब कुछ का आधार श्री गुरु नानक देव जी तथा अन्य गुरु साहिबान द्वारा प्रदत्त गुरमति फ़लसफ़ा ही था।

तत्पश्चात अंग्रेजों की आमद हुई और उन्होंने भारत पर अपना शासन जमाना शुरू कर दिया था। यहां यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि पंजाबवासियों ने अपनी ताकत के बलबूते देश के अन्य क्षेत्रवासियों के मुकाबले बहुत कम समय तक गुलामी को सहन किया। मुगलों के बाद देश-कौम की आज़ादी छीनने वाली दुनिया की सबसे चालाक मानी जाती कौम अंग्रेज ही थे।

अंग्रेजों से भारत को आजाद करवाने के लिए जिन देशवासियों ने संघर्ष की बुनियाद रखी उनकी दासतान पंजाबियों, खासकर नानक-नाम-लेवा सिक्खों का ज़िक्र किए बिना अधूरी है। सरदार शाम सिंघ अटारी, महारानी जिंदां, बाबा बीर सिंघ नौरंगाबादी, भाई महिराज सिंघ का योगदान एवं कुर्बानी उल्लेखनीय है। अंग्रेजों के विरुद्ध असहयोग लहर सबसे पहले बाबा राम सिंघ के नेतृत्व में सिक्खों ने ही चलायी। जनरल मोहन सिंघ आज़ाद हिंद फौज के आधारभूत संस्थापकों में से एक उल्लेखनीय सिक्ख शख़्सियत हैं। बहुत ही कम संख्या में होने के बावजूद भी सिक्खों की कुर्बानियों की प्रतिशतता को देखकर इतिहासकार वाह-वाह कर उठते हैं। अंग्रेज साम्राज्यवादियों द्वारा छीने गए सर्वकल्याणकारी खालसा राज्य की पुनर्स्थापना के लिए यथासंभव प्रयास किए गए। चाहे इन प्रयासों का तत्काल कोई फल प्राप्त नहीं हुआ था मगर इन प्रयासों के लिए जो इतिहास सृजित किया गया वो आने वाले स्वतंत्रता संग्रामियों के लिए अवश्य प्रेरणा-स्रोत सिद्ध हुआ। पंजाब-निवासी नानक-नाम-लेवा सिक्खों ने देश को आजाद करवाकर ही दम लिया और इसका इनको आज़ादी वाले दिन ही भारी हर्जाना चुकाना पड़ा। जब १५ अगस्त, १९४७ ई. को सारा देश आज़ादी का जश्न मना रहा था, उस समय पंजाब-निवासी अपने जान से प्यारे पंजाब के हुए टुकड़ों का दुख अपने मन-तन पर झेल रहे थे। उनको उनके जान से प्यारे गुरुद्वारा साहिबान से अलग-थलग किया जा रहा था। वे कत्लोगारत का शिकार होकर अपने परिवारों से बिछड़ रहे थे; घर से बेघर होकर अपने परिवारों के लिए सुरक्षित जगह ढूंढ रहे थे।

आज़ादी के बाद कुछ समय व्यतीत होने पर सिक्खों द्वारा दी कुर्बानियों को नज़रंदाज कर इन्हें दूसरे दर्जे के शहरी होने का एहसास करवाने के लिए कृतघ्नता वाली प्रक्रिया शुरू कर दी गई। हक-सच की लड़ाई आज भी सिक्खों द्वारा जारी है और ये शांतमयी ढंग से देश की मुख्य धारा से जुड़े रहकर अपना रोष प्रकट करते आ रहे हैं। राज्य-गद्दी का सुख भोग रहे सियासतदानों को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि वे सिक्खों द्वारा अपनी जानें वारकर हासिल की आज़ादी के कारण ही आज राज्य-सत्ता का सुख भोग रहे हैं।

आओ! अपने शहीदों के प्रति अपनी श्रद्धा का इज़हार करते हुए उनका पूर्णरूपेण सम्मान करें, उनके द्वारा छोड़े पद-चिन्हों पर चलते हुए हमेशा हक-सच की स्थापि हेतु आवाज़ बुलंद करें, ताकि वे सदा के लिए प्रेरणा-स्रोत बने रहें।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पेश नैतिक उपदेश

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

जगद्-गुरु, निरंकार स्वरूप, अंतरयामी, महान् रहबर, सिक्ख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी ने मानवता पर एक से बढ़कर एक उपकार किए हैं। इनमें से एक बहुत बड़ा उपकार हम सब पर संतों-भक्तों की बाणी को संकलित करने का है। उनका इस संपूर्ण दिव्य स्वरूप बाणी को पोथी रूप में संभालना आलौकिक, अद्वितीय और महान् कार्य है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के लिए पहले 'पोथी' शब्द ही प्रचलित था। *''पोथी परमेसर का थानु''* गुरु-वचन पोथी रूप में संकलित बाणी के दिव्य व अमृत-भरी बाणी होने का साक्षी है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अनेक पावन फरमान मिलते हैं, जिनके द्वारा 'गुरु' को परिभाषित करते हुए गुरबाणी, बाणी तथा शबद को एक ही अर्थ में गुरु-स्वरूप होने का उपदेश दृढ़ करवाया गया है। सिक्ख धर्म के अलावा अन्य किसी भी धर्म ने 'शबद' को गुरु मानने का सिद्धांत विश्व में नहीं दिया है।

श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी बाणी 'सिध गोसटि' में *''सबदु गुरू सुरति धुनि चेला''* के वाक के माध्यम से जहां समकालीन भारतीय दर्शन के प्रमुख समझे जाते विद्वान, योगी व सिध पुरुषों को आध्यात्मिक क्षेत्र में शबद-गुरु के सिद्धांत की श्रेष्ठता का बोध करवाया, वहीं उन्होंने शबद-गुरु की बुनियाद भी रखी।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में छः सिक्ख गुरु साहिबान की बाणी के साथ-साथ पंद्रह भक्त साहिबान, ग्यारह भट्ट साहिबान, चार गुरसिक्खों की बाणी सुशोभित है। इसमें पंजाबी भाषा के साथ-साथ हिंदी, संस्कृत, फारसी, गुजराती, सिंधी तथा ब्रज व मराठी भाषा का उपयोग हुआ है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जीवन के प्रत्येक पक्ष— आध्यात्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, सदाचारक आदि को पेश किया गया है। इसमें सत्य, परम सत्य, उच्च नैतिकता, सदाचार, सादगी, भाईचारक सद्भावना, समानता, सच्चे समाजवाद के महत्त्व को दर्शाया गया है, व्याख्यायित किया गया है। सत्तासीन शासकों को भी सत्य को अपनाने का उपदेश दिया गया है :

जिनी सचु पछाणिआ सचु राजे सेई ॥
एहि भूपति राजे न आखीअहि

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; फोन : ९८७२२-५४९९०*

दूजै भाइ दुखु होई ॥ (पन्ना १०८८)

अर्थात् जिन्होंने सत्य को अपना लिया, वही सच्चे शासक होते हैं। अगर शासक सच्चाई पर चले, तो सब लड़ाई-झगड़े, हेर-फेर खत्म हो जाएं।

सत्य को अपनाना सभी मनुष्यों के लिए उत्तम साधना है, जो पाप में से निकाल कर हमारे आचरण को निर्मल कर देती है। इस संबंध में श्री गुरु ग्रंथ साहिब हमारी आगवानी करते हैं :

सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ॥
नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ॥
(पन्ना ४६८)

सत्य बोलना ही धर्म है। झूठ कभी नहीं बोलना चाहिए :

बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ ॥
(पन्ना ४८८)

सच्चाई पर चलते हुए यदि मानव अपनी बोलचाल में मधुरता ले आए तो सोने पर सुहागे जैसी बात हो जाती है। इससे नम्रता का महान गुण पैदा हो जाता है तथा अहं, क्रोध जैसे दोष एवं विकार दूर रहते हैं। अहं से ग्रस्त मनुष्य प्रकृति से दूर होता चला जाता है। समाज उसे घृणा की दृष्टि से देखने लगता है। उसका सम्मान कम हो जाता है, क्योंकि वह अपने अलावा बाकी सभी को तुच्छ समझता है, उन्हें हेय दृष्टि से देखता है व स्वयं को ही समझदार तथा श्रेष्ठ समझता है। ऐसे अहंकारी इंसान की दुर्गति होती है। गुरु साहिबान सदैव मीठा बोलने का और विनम्र रहने का उपदेश देते हैं :

मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥
(पन्ना ४७०)

किसी को बुरा क्यों कहा जाए, जबकि सबका मालिक एक है ?

मंदा किस नो आखीऐ
जां सभना साहिबु एकु ॥ (पन्ना १२३८)

माया अर्थात् दौलत को गुरु साहिब नागिन एवं ठगिनी कहकर तिरस्कृत करते हैं। माना कि नित्यप्रति की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु माया का महत्त्व है, किंतु जब इंसान लोभ-लालच में फंसकर जरूरत से ज्यादा माया एकत्र करनी शुरू कर देता है, तब यह बुराई बन कर समाज के लिए अति घातक सिद्ध होती है। दुनिया के अधिकतर लोग अगर भूखे-नंगे, दुखी रहते हैं तो चंद लोगों द्वारा इकट्ठी की गई माया का क्या लाभ ?

जो मोहि माइआ चितु लाइदे
से छोडि चले दुखु रोइ ॥ (पन्ना ८१)

हम गुरमति के सिद्धांत— किरत करो, नाम जपो, वंड छको से कोसों दूर हैं। यदि इसे प्रत्येक प्राणी जीवन-व्यवहार में शामिल कर ले तो हमारे सामाजिक वातावरण में खुशहाली तथा मन में सद्भावना का गहरा संचार हो

जाए। बाबा शेख फरीद जी का फरमान है :

फरीदा जे जाणा तिल थोड़ड़े
संमलि बुकु भरी॥ (पन्ना १३७८)

सद्भावना और भाईचारे का संदेश देते हुए भक्त कबीर जी फरमान करते हैं :

अवलि अलह नूरु उपाइआ
कुदरति के सभ बंदे॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ
कउन भले को मंदे॥ (पन्ना १३४९)

हमें सभी जनों को अपना समझना चाहिए। किसी को गैर नहीं समझना चाहिए। सभी इंसान एक ही परम पिता अकाल पुरख की अखण्ड ज्योति से पैदा हुए हैं।

गुरबाणी में सच, सदाचार, उच्च आचरण, नैतिकता, ईमानदारी, शुचता पर बल दिया गया है। पराई स्त्री के साथ गमन करने का भी विरोध किया गया है। यह अनैतिक कार्य सामाजिक मर्यादा एवं आचरण के विरुद्ध है। यह तन और मन, दोनों को अपवित्र करने वाला नीच व घटिया कार्य है। भक्त नामदेव जी के परम कथनानुसार :

घर की नारि तिआगै अंधा॥
पर नारी सिउ घालै धंधा॥...
पापी का घरु अगने माहि॥
जलत रहै मिटवै कब नाहि॥ (पन्ना ११६४)

किसी भी तरह का कुकर्म व घटिया आचरण करने वाली नारी को गुरबाणी में 'कुनारि' कहा गया है।

एक और अति उत्तम सत्य को गुरबाणी उजागर करती है कि जैसा हम अन्न (अनाज) खाते हैं, वैसे ही हमारा तन और मन बन जाता है। उस भोजन को ग्रहण करने का क्या लाभ, जिससे हमारा शरीर रोगग्रस्त हो जाए और हमारा मन अशांत एवं विकारगस्त हो जाए!

बाबा होरु खाणा खुसी खुआर॥
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ
मन महि चलहि विकार॥ (पन्ना १६)

गुरबाणी हमें उपदेश देती है कि हमें अपनी उपजीविका (रोज़ी-रोटी) अपने उचित साधनों व परिश्रम द्वारा जुटानी चाहिए। किसी अन्य पर निर्भर नहीं रहना चाहिए और निठल्ले नहीं बैठना चाहिए। अपनी उपजीविका अर्जित करने हेतु पाखंड हर्गिज़ नहीं करना चाहिए। गुरु साहिब ने साधुओं, योगियों को जागृत किया, जो धूनियां रमाकर, बदन पर भस्म लगाकर और घर-गृहस्थी त्याग कर भटकते फिरते थे। यह चंचल मन को साधने का उचित मार्ग नहीं है। निठल्ले बैठकर या दूसरों से मांगकर खाने की गुरु जी ने निंदा की है :

मखटू होइ कै कंन पड़ाए॥
फकरु करे होरु जाति गवाए॥
गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ॥
ता कै मूलि न लगीऐ पाइ॥ (पन्ना १२४५)

किसी के घर-द्वार पर बैठकर सुख-

सुविधाओं की इच्छा करना अच्छी बात नहीं है। यह एक तरह की पराधीनता वाली अवस्था होती है। गुलामी मनुष्य को तन और मन दोनों से असहाय बना देती है। इस संबंध में बाबा शेख फरीद जी बहुत खूब फरमान करते हैं :

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांई मुझे न देहि ॥
जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ॥
(पन्ना १३८०)

हर युग में सदाचार का बहुत महत्त्व रहा है। परोपकार करना और दूसरे लोगों के दुखों व कष्टों को दूर करना सर्वश्रेष्ठ कर्म होता है। इससे मन को, आत्मा को जो संतुष्टि एवं शांति मिलती है, वह अकथनीय अर्थात् अवर्णनीय है। परोपकार के कार्य करने से हम भवसागर से पार हो सकते हैं। गुरबाणी का पवित्र फरमान है :

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ (पन्ना २५)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में नैतिक पक्ष को विस्तृत रूप से पेश किया गया है। परोपकार, दया, प्रेम, भाईचारा, सद्भावना, श्रम, सच्चाई, ईमानदारी, समानता, सहिष्णुता, नम्रता, प्रभु-सिमरन, सेवा, बांट कर खाने पर भी बहुत बल दिया गया है। गुरु के सच्चे सेवक, गुरु-घर के सच्चे श्रद्धालु दीन-दुखियों और जरूरतमंदों की लंगर, धन, कपड़ों, दवाओं आदि द्वारा सेवा व सहायता करने से कभी पीछे नहीं हटते। वे मुफ्त में ये सभी परोपकारी काम निष्काम भावना व लगन के साथ करते हैं। कोरोना महामारी के दौरान अनेक सिक्खों द्वारा मरीज़ों व जरूरतमंदों के मुफ्त इलाज, दवाओं, ऑक्सीजन, पी.पी. किट्स, आक्सीजन कंसनट्रेटर्स, वेंटीलेटर्स, लंगर, सैनेटाइजर आदि द्वारा की गई सेवा व सहायता को देखकर लोग कहने लगे हैं कि बेशक विश्व में सिक्खों की संख्या बहुत कम है, परंतु इनमें दूसरों की निष्काम भावना से सेवा एवं सहायता करने का जज़्बा व जोश बहुत ज्यादा है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कोरोना-रोगियों के इलाज हेतु कई जगह अस्थायी अस्पताल खोल दिए, जो कि अपने उद्देश्य में पूर्ण रूप से सफल रहे।

स्वतन्त्रता का अधिकार : हउ गोसाई दा पहिलवानड़ा

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

स्वतंत्रता का जीवन में होना एक बड़ी देन, एक बड़ी उपलब्धि एवं संस्कारपूर्ण जीवन-ढंग माना गया है। अपने ढंग से सोच पाना, स्वयं को व्यक्त कर पाना, स्वेच्छा से कार्य कर पाना भाग्यशाली होने का लक्षण माना गया है। आज जब दास-प्रथा समाप्त हो चुकी है, लगभग सभी देश संप्रभुता भोग रहे हैं, सारे संसार में विधि व न्याय का शासन है, फिर भी मनुष्य किसी न किसी स्तर पर दबाव, त्रास में है। हर मनुष्य अपने से अधिक शक्तिशाली से भयभीत है। एक बड़ा देश अपने से छोटे देश को धमका रहा है। दो विश्व-युद्धों की त्रासदी अभी तक भुलाई नहीं जा सकी है। छोटे देशों को अपना अस्तित्व संकट में नजर आता है। अनेक छोटे-बड़े युद्ध वर्तमान पीढ़ियों ने देखे हैं। वर्तमान में युक्रेन-रूस का युद्ध नई-नई आशंकायें खड़ी कर रहा है। देश ही सुरक्षित नहीं हैं तो मनुष्य की स्थिति कितनी दयनीय है, इसे सरलता से समझा जा सकता है। न्याय की आड़ में शक्ति-प्रदर्शन का नग्न नृत्य चल रहा है। यथार्थ भयावह है, फिर भी स्वतन्त्रता को सार्वजनिक रूप से नकारने का साहस न तो किसी देश में है, न किसी व्यक्ति में, भले ही वह कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो। वास्तव में स्वतन्त्रता एक बहुपक्षीय अवधारणा है। इसमें व्यक्ति, समाज व देश शामिल हैं।

श्री गुरु नानक साहिब का संसार में आगमन स्वतन्त्रता की इस अवधारणा पर बड़ा प्रभाव डालने वाला सिद्ध हुआ। प्रथम बार उन्होंने मनुष्य के संपूर्ण जीवन-व्यवहार को केंद्र में लाते हुए उन सारी व्यवस्थाओं, दशाओं को निशाने पर लिया जिससे लेशमात्र भी मनुष्य का जीवन प्रभावित हो रहा था। श्री गुरु नानक साहिब ने देखा कि प्रभावशाली लोगों ने अपनी शक्ति का कोई न कोई आधार बना लिया है। कोई अपने सम्बन्धियों के बल पर, कोई सन्तान, कुल के भरोसे, कोई सत्ताधारी का संग कर अपनी मनमानी कर रहा है, जिससे दीन, निर्बल की स्वतन्त्रता का हरण, शोषण हो रहा है। कोई धन के अहंकार में है, कोई ज्ञान के अहंकार से फूला हुआ है। लोग ऐसा व्यवहार कर रहे हैं जैसे वे अमरत्व प्राप्त करके आये हैं और उन्होंने सदैव यहीं रहना है। श्री गुरु नानक साहिब ने इस मनोदशा पर कड़ा प्रहार करते हुए कहा कि यह संसार टिक कर रहने का स्थान नहीं है। यहां टिकने की बात तो कोई तब सोचे जब इस संसार को ही रहना हो। संसार में जो भी दृष्टव्य है वह

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४१७८-५२८९९*

सभी नाशवान है। जो भी आया, धर्म का ज्ञाता, सिद्ध, विद्वान, सुलतान, वजीर, दरबारी सभी एक दिन कूच कर गये। एक परमात्मा ही है जो सदा था, है और सदा रहने वाला है :

अलाहु अलखु अगंमु कादरु करणहारु करीमु।
सभ दुनी आवण जावणी मुकामु एकु रहीमु॥
(पन्ना ६४)

श्री गुरु नानक साहिब ने कहा कि एक परमात्मा ही है जो सभी गुणों का सागर है, सभी शक्तियों का स्रोत व कर्त्ता है। वह दयालु भी है और कृपा कर उद्धार करने वाला भी है। सारा संसार आवागमन, सृजन-विनाश के चक्र में फंसा हुआ है, किन्तु एक परमात्मा ही है जो इन सबसे परे सदा स्थिर रहने वाला है। श्री गुरु नानक साहिब ने संसार की सच्ची सत्ता के दर्शन करा कर उनके बारे में सदियों से स्थापित भ्रम तोड़े, जिन्हें लोग वास्तविक सत्ता समझ कर उनकी अधीनता स्वीकार करने को विवश थे। उनकी स्वतन्त्रता का हरण कर झूठी शक्तियां अपना प्रभुत्व जमाये बैठी थीं और संसार को छल रही थीं। लोग ऐसी शक्तियों के आगे याचक बन खड़े रहते थे। किसी से कुछ प्राप्त करने की आशा करते, किसी से कुछ मांगते। वे द्वार-द्वार के दास बने हुए थे। गुरु साहिब ने सबको उस एक परमात्मा के साथ जोड़ा जो कुछ भी देने में समर्थ था :

सभे थोक परापते जे आवै इकु हथि॥
जनमु पदारथु सफलु है जे सचा सबदु कथि॥
(पन्ना ४४)

उपरोक्त वचन में श्री गुरु अरजन साहिब ने कहा कि परमात्मा की कृपा से समस्त मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं। परमात्मा ऐसा दाता है जिससे मनोवांछित कुछ भी प्राप्त किया जा सकता है। परमात्मा की कृपा जीवन को समृद्ध करने वाली व जीवन को सफल करने वाली होती है। इसके लिये आवश्यक है कि मनुष्य परमात्मा के बताये मार्ग पर चले व सत्य, धर्म के अनुकूल आचरण करे। जब मनुष्य परमात्मा की सत्ता स्वीकार कर लेता है, उसे अपना स्वामी, दाता, पालक मान लेता है, तो सारी सांसारिक शक्तियों के भ्रम, दासता से मुक्त हो जाता है। भक्त प्रहलाद ने परमात्मा को अपना स्वामी मान लिया तो उसके लिये अपने पिता व देश के राजा की सत्ता अप्रासंगिक हो गई। उसका मन-मस्तिष्क अपने पिता और राजा के धर्महीन आदेशों से स्वतंत्र हो गया, किसी सांसारिक सत्ता-शक्ति का भय नहीं रहा। परमात्मा को गुरु साहिब ने शाहों का शहंशाह, राजाओं का महाराजा कहा, जिसके समान कोई अन्य नहीं है।

स्वतन्त्रता किसी देश के संविधान के लिखित प्रावधानों से अधिक मन की आवश्यकता है। कई बार मनुष्य के पास सब कुछ हो तब भी वह स्वतन्त्रता का आनन्द नहीं भोग पाता। उसके पास जो कुछ होता है, उसका ही बंदी बन कर रह जाता है। कोई मनुष्य परिवार हेतु भोतिक सुख-सुविधाओं के संचय करता हुआ अहंकार से भर जाता है कि वह खुद कर्त्ता है, खुद दाता हैं। इस फेर में वह परमात्मा को विस्मृत कर देता है। इस

कारण उसे दुख सहने पड़ते हैं। यह उसका भ्रम सिद्ध होता है कि सभी सुख-सुविधाएं परमात्मा के कर्त्ता एवं दाता होने से हैं। एक परमात्मा ही है जो मनुष्य को पदार्थवाद के मोह की कैद से स्वतंत्र कराने वाला है, जो उसे जीवन के वास्तविक लक्ष्य से दूर कर देता है। गुरु साहिब ने दूसरा बंधन धन-दौलत को बताया है, जिसका संचय मनुष्य प्राय: अधर्म करते हुए करता है और अनेक लोगों की आह लेता है। उसे धन के लोभ में यह याद नहीं रहता कि वह नाशवान है और जिनके लिये धन संचित कर रहा है वे भी नाशवान हैं। धन का अहंकार उसकी मति भ्रष्ट कर देता है और वह परमात्मा को भूल जाता है। धन के लोभ की कैद में रहने वाले को परमात्मा स्वयं ही अपनी कृपा से वंचित कर देता है। मनुष्य के पास राज-सत्ता हो, भोग-विलास के भरपूर साधन हों, संसार के सारे सुंदर स्थानों का भ्रमण कर ले, उसके पास स्वामित्व के नाम पर बहुत कुछ है, बहुत सारे लोगों पर उसका हुक्म चलता है, किन्तु यह सब व्यर्थ है, परमात्मा की भक्ति के बिना मिट्टी के समान है। ये सारे ऐसे बंधन हैं जो परमात्मा से दूर करते हैं और जीवन को व्यर्थ करते हैं। गुलाम व्यक्ति अपने लिये नहीं, अपने मालिक के लिये जीता है। गुलाम की स्वयं की कोई इच्छा नहीं होती। परमात्मा से विमुख मनुष्य अपने परिवार के मोह, अपनी दौलत के लोभ, अपनी शक्ति-सामर्थ्य के अहंकार की गुलामी कर रहा है। यह स्व-आरोपित पराधीनता है, जिसका परिणाम सर्वाधिक दुख देने वाला होता है। एक तो जीवन भ्रम, संशय, क्षोभ, क्लेश से भर जाता है, दूसरा मानव जीवन प्राप्त कर आवागमन से मुक्ति प्राप्त करने का उद्देश्य पराजित हो जाता है। इसका एक ही उपाय है— मोह, लोभ, अहंकार से ऊपर उठ कर परमात्मा के साथ मन जोड़ना :

सफल मूरतु सफला घड़ी
जितु सचे नालि पिआरु॥
दूखु संतापु न लगई जिसु हरि का नामु अधारु॥

(पन्ना ४४)

परमात्मा से प्रीति थी, तभी सिक्ख पंथ ने समय की सरकारों के अधर्म, आतंक, अन्याय, बर्बरता को स्वीकार नहीं किया और अपने सिद्धांतों पर अडिग रहा। यह बात गुरु साहिबान के काल में जितनी सत्य थी उतनी ही उनके बाद भी आज तक सत्य सिद्ध हुई है। बाबर की कैद, अकबर की आर्थिक सहायता, जहांगीर का अंधा कानून, शाहजहां की फौजी ताकत और औरंगजेब का जुल्म भी सिक्ख पंथ को स्वतन्त्रता का आनन्द-भोग करते हुए आगे बढ़ने से नहीं रोक सका। श्री गुरु नानक साहिब अपनी कालावधि की अकेली ऐसी शक्ति थे जिन्होंने बाबर को जाबिर और पाप की बारात का दूल्हा कहा। इससे पहले कोई अन्य ऐसा साहस नहीं दिखा सका था। श्री गुरु अमरदास जी ने 'पहले पंगत, पाछे संगत' का बनाया नियम मानने के लिये अकबर को भी विवश कर दिया था। श्री गुरु अरजन साहिब ने जहांगीर के किसी भी दबाव, भय का प्रतिकार करते हुए अपना बलिदान दिया। श्री गुरु

हरिगोबिंद साहिब द्वारा श्री अकाल तख्त साहिब का सृजन सीधा व स्पष्ट संदेश था कि सिक्ख पंथ को मात्र परमात्मा की सत्ता ही मान्य है। श्री गुरु हरिराय साहिब का दिल्ली न जाना व औरंगजेब के प्रभाव में आकर गुरबाणी का मात्र एक शब्द बदल देने वाले अपने पुत्र रामराय से सदा के लिये सम्बन्ध तोड़ लेना सिक्ख संकल्प का प्रकटीकरण था। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने दिल्ली में रह कर भी औरंगजेब को मुलाकात का समय न देने का अद्वितीय साहस दिखाया। श्री गुरु तेग बहादर जी का बलिदान औरंगजेब के अहम् को चूर-चूर कर देने वाला था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा सजा कर, युद्धों में मुगल सेना को बार-बार धूल चटा कर दिल्ली तख्त को जर्जर कर दिया। चार साहिबजादों व सिक्खों के अपूर्व बलिदान ने ऐसा सशक्त प्रतिरोध खड़ा किया कि मुगलों के हौसले पस्त हो गये। दो शताब्दियों के लंबे संघर्ष के बाद सिक्खों की स्वतंत्र चेतना व स्वाभिमान अक्षुण रखा जा सका था। गुरु-काल में सिक्खों के पास कोई भौगोलिक राज्य नहीं था, किन्तु अपनी चेतना में उन्होंने एक स्वतंत्र राज्य की प्रभुसत्ता को साकार करने में सफलता प्राप्त कर ली थी और उसे बनाये भी रखा था। हर सिक्ख स्वतंत्र चेतना में बसे उस संप्रभु राज्य का नागरिक था। गुरु साहिबान के जहां भी चरण पड़े, वह धरती पावन हो गई। जहां जहर भरा हुआ था वहां अमृत बरसने लगा :

लाहौर सहरु अंम्रित सरु सिफती दा घरु ॥

(पन्ना १४१२)

इसका सर्वोत्तम उदाहरण दिल्ली का चांदनी चौक है जो किसी समय औरंगजेब की कोतवाली थी और जहां लोगों को भयभीत करने के लिये श्री गुरु तेग बहादर जी को शहीद किया गया। आज वह स्थान तीर्थ बन चुका है, जहां संसार भर से लोग आते हैं और अपनी सुख-समृद्धि की प्रार्थना करते हैं। ऐसी शोभा तो देश के शासकों के घरों की नहीं जो दिल्ली में ही रहते हैं। यहां आकर बस, श्री गुरु तेग बहादर जी और उनकी कृपा की कामना ही याद रहती है। गुरु का हर स्थान आनन्द का स्थान है :

जितु ग्रिहि मंदरि हरि होतु जासु तितु घरि
आनदो आनंदु भजु राम राम राम ॥

(पन्ना १२९७)

आनन्द स्वतन्त्रता में ही होता है। किसी भी तरह की पराधीनता हो तो सच्चे आनन्द की अनुभूति नहीं हो सकती। स्वतंत्रता और सच्चे आनन्द के योग्य बनना पड़ता है। पहली योग्यता है— निर्भय बनना। जिन बन्धनों में मनुष्य बंधा हुआ है उन्हें तोड़ने के लिये, जिस कारा में वह कैद है उससे आजाद होने के लिये निर्भयता पहली आवश्यक शर्त है। निर्भय होकर ही सत्य के लिये खड़ा हुआ जा सकता है। श्री गुरु नानक साहिब ने परमात्मा को निरभउ अर्थात् भय से रहित बताया। मनुष्य को निर्भय बनना है तो उसे भय से रहित परमात्मा की शरण में जाना होगा :

जिन निरभउ जिन हरि निरभउ धिआइआ जी
तिन का भउ सभु गवासी ॥ (पन्ना ११)

परमात्मा किसी भी प्रकार के भय से रहित

है। वह काल के भय से भी ऊपर है, क्योंकि वह जन्म-मृत्यु के चक्र से बाहर है। मनुष्य को सबसे बड़ा भय मृत्यु का ही होता है। गुरबाणी में भी कहा है कि काल सदैव मनुष्य के सिर पर मंडरा रहा है। परमात्मा के विपरीत मनुष्य जन्म-मृत्यु के चक्र में फंसा हुआ है। इस कारण उसका मृत्यु से भय स्वाभाविक है। कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं है जिसे मृत्यु का भय न सताता हो। मनुष्य को किसी अन्य तरह का भय न हो, वह बहुत साहसी हो, फिर भी वह मृत्यु के भय में जीता है। उसका निर्भय होना असंभव होता है। इस असंभव को संभव गुरु बनाता है। बाबा बुड्ढा जी जब बालक थे, उन्हें श्री गुरु नानक साहिब के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने गुरु साहिब से कहा कि उन्हें मृत्यु से बहुत भय लगता है। गुरु साहिब ने कहा कि अभी तो तुम बालक हो। बाबा बुड्ढा जी ने कहा कि ''एक बार उनके गांव में कुछ लुटेरे आये और खेतों की कच्ची-पक्की सारी फसल काट ली। चूल्हे में लगी हुई लकड़ियों में से छोटी लकड़ियां पहले जल जाती हैं।'' श्री गुरु नानक साहिब ने उनकी शंका का निवारण करते हुए कहा कि ''परमात्मा मृत्यु से अधिक बलवान है। यदि तुम परमात्मा के हो जाओ तब मृत्यु तुम्हें डरा नहीं सकेगी। परमात्मा का प्रेम मन में बस जाये तो उसकी कृपा से मृत्यु ही नहीं सभी तरह के भय दूर हो जाते हैं और वह आवागमन के फेर से मुक्त हो जाता है।'' परमात्मा की भक्ति निर्भय करने वाली है। उसकी शक्ति अद्‌भुत व विस्मित करने वाली है। वह किसी को भी अपना बल, अपने गुण दे सकता है। उसकी कृपा हो तो मनुष्य को कोई भी क्षति नहीं पहुंचा सकता :

जिसु तूं रखहि हथ दे तिसु मारि न सकै कोइ ॥

(पन्ना ४३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पन्ना ४९९ पर श्री गुरु अरजन साहिब का वचन है कि परमात्मा को एक पल लगता है किसी को स्थापित करने अथवा विस्थापित करने में। उसकी शक्ति का कोई मोल ही नहीं है, कोई पारावार ही नहीं है। वह एक पल में किसी को राजा से रंक और रंक से राजा बना सकता है :

खिन महि थापि उथापनहारा
कीमति जाइ न करी ॥
राजा रंकु करै खिन भीतरि नीचह जोति धरी ॥

परमात्मा से मन जोड़ कर मनुष्य अपनी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त हो जाता है। यह निर्भय होने का बहुत बड़ा आधार बनता है। मृत्यु को वह सत्य मान कर स्वीकार कर लेता है, किन्तु उससे भयभीत नहीं होता। वह जीवन को भी परमात्मा की दात मानता है और मृत्यु को भी। हर स्थिति में उसे सहज और आनन्द में रहना आ जाता है :

जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥ *(पन्ना ३)*

जब परमात्मा की हर इच्छा भली लगनी लगे तो मनुष्य अचिंत हो जाता है। मृत्यु भी उसके अंदर चाव पैदा करने लगती है। सिक्ख सदैव अपनी व अपनी कौम की अस्मिता बनाये रखने में इसीलिये सफल हुए, क्योंकि उनके अंदर मृत्यु से भी खेलने का भाव था। उनका जीवन अपने

लिये नहीं, परमात्मा के लिये समर्पित था और उनके अंदर कामना रहती थी कि यदि मरना भी पड़े तो परमात्मा, सत्य, धर्म के लिये। भारत इतना बड़ा देश है। सन् १९४७ से पूर्व इसका क्षेत्रफल और अधिक व्यापक था। उस समय भी सिक्खों की आबादी भारत की कुल आबादी का नगण्य मात्र ही थी। फिर भी सबसे अधिक फांसी पर चढ़ने वाले, कारावास भोगने वाले और स्वतन्त्रता के आन्दोलन में आगे रहने वाले सिक्ख ही थे। इनके अनुपात में बहुसंख्यक वर्ग कहीं ठहरते ही नहीं। आज यह इतिहास पढ़ कर उन्हीं लोगों को आश्चर्य होता है जिन्हें यह लेश-मात्र भी एहसास नहीं कि सिक्खों में स्वतन्त्रता की प्रचंड ज्योति गुरु साहिबान की कृपा से प्रकाशित है और ये इतने निर्भय हैं कि मौत की आँख में आँख डाल कर बात करते हैं। यह इतिहास-मात्र नहीं है, हमारी आँखों के सामने का वर्तमान भी है कि कैसे नौजवान सिक्ख फौजियों ने चीनी सैनिकों को काबू कर पीछे हटने पर विवश कर दिया था। स्वतन्त्रता प्राप्त करना और स्वतन्त्रता को बनाये रखना दोनों ही निर्भय हुए बिना संभव नहीं है। इसके लिये एक सैनिक की निर्भयता नहीं, परमात्मा के एक भक्त की निर्भयता चाहिये। सिक्ख की निर्भयता एक सैनिक की नहीं, गुरु के सिक्ख की निर्भयता होती है जो उसे गुरु की कृपा से प्राप्त होती, जैसे श्री गुरु नानक देव जी ने बाबा बुड्ढा जी को निर्भय किया था, जैसे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अमृत-पान करा कर सिक्खों को खालसा बनाया था, जो सवा लाख वैरी के साथ अकेले टकराने का दम रखता है। एक-एक सिक्ख अमृत-पान कर संत (भक्त) भी बना और सिपाही (योद्धा) भी। वह पहले भक्त है, क्योंकि उसे सारा बल भक्त बन कर ही प्राप्त होता है। परमात्मा की कृपा निर्भय बनाने वाली है और बल देने वाली भी है। बल के बिना निडरता अप्रासंगिक होती है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जहां सिक्खों को परमात्मा के साथ जोड़ा, वहीं उनमें वीर-भाव बनने के उपाय भी किये। उनके दरबार में कवियों को वीर रस की कवितायें रचने व सुनाने के लिये प्रोत्साहित किया जाता था। पांच ककारों में कृपाण को शामिल किये जाने के पीछे मुख्य भाव यही था। परमात्मा निर्भय (निरभउ) है और अपने भक्त को भी निर्भय करता है। परमात्मा करता पुरख है और वह अपने शरणागत को भी सामर्थ्य प्रदान करता है। परमात्मा ने *''कीता पसाउ एको कवाउ''* एक संकेत-मात्र से इतनी बड़ी सृष्टि की रचना कर दी। इसमें उसने किसी की सलाह, सहायता नहीं ली। कोई था भी नहीं और अब भी नहीं है जो उसे सलाह, सहायता दे सके। वह सर्वसमर्थ है। परमात्मा की शरण में जीवन व्यतीत करने वाले मनुष्य के जीवन में भी संकट आते हैं, उसे दुखों का सामना करना पड़ता है, किन्तु अंतर यह होता है कि परमात्मा स्वयं अपना बल देकर उसे शक्तिशाली बनाता है और उसके सारे बंधन काट देता है :

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥
नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै

तुम ही होत सहाइ ॥ (पन्ना १४२९)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब औरंगजेब की कैद में थे। जल्लाद उनके सामने था, फिर भी वे सारे बन्धनों से मुक्त हो स्वतन्त्रता के सुख की बात कर रहे थे। गुरु साहिब संदेश दे रहे थे कि परमात्मा सहायक होता है तो सारे उपाय संभव हो जाते हैं। उन्होंने सारी सांसारिक शक्तियों के अस्तित्व को नकारते हुए कहा कि सब कुछ परमात्मा की आज्ञा और इच्छा में है, फिर बंधन कैसे! परमात्मा का बल आत्मा को दृढ़ करता है और पांच तत्वों से रचित तन महत्वहीन हो जाता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'बचित्र नाटक' में श्री गुरु तेग बहादर जी के बलिदान का उल्लेख करते हुए कहा कि श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपने तन के ठीकरे को दिल्ली के बादशाह के सिर पर फोड़ कर परलोक गमन किया। यह सत्य है। जब परमात्मा से आत्म-बल प्राप्त होता है तो तन ठीकरे के समान मूल्यहीन लगने लगता है। बन्धनों से मुक्त होने और स्वतन्त्रता भोगने के लिये सिक्ख को तन की कीमत नगण्य लगने लगती है। सिक्खों ने कदम-कदम पर अपने इस आत्म-बल को प्रकट किया और संसार को आश्चर्य में डाला। मुगलों के समय अपने धर्म व आत्म-चेतना की स्वतन्त्रता के लिये सिक्खों के बल का अद्‌भुत प्रदर्शन पहले चमकौर के युद्ध में हुआ जब मात्र चालीस सिक्खों ने दस लाख मुगल फ़ौज के सारे मंसूबे बुरी तरह से ध्वस्त कर दिये थे, जबकि स्वयं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सीधे युद्ध के मैदान में नहीं उतरे थे। इसके बाद बाबा बंदा सिंघ बहादुर का सरहिंद को तहस-नहस कर देना और विशाल राज्य स्थापित करना परमात्मा के बल के बिना संभव नहीं था। एक समय आया जब जकरिया खान, मीर मन्नू जैसों ने सिक्खों को पूरी तरह से खत्म कर देने की कसम खाई थी। तीस हजार से अधिक सिक्ख शहीद हो गये। शेष सिक्ख जंगलों में चले गये, किन्तु जब भी कोई सरकारी एलान होता ये किसी न किसी तरह स्वयं को प्रकट कर सबूत देते कि सिक्ख मिटे नहीं हैं, यह जानते हुए भी कि ये मौत का वरण करने जा रहे हैं। इन्हें अपने धर्म, अपनी सभ्यता, अपनी सोच से प्रेम था और उस पर किसी भी तरह के बंधन इन्हें स्वीकार नहीं थे। अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता आन्दोलन में कुल १२१ लोगों को फांसी दी गई, जिनमें ९३ सिक्ख थे। आजाद हिन्द फौज का आधार भी सिक्ख थे और ये बहुसंख्या में थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी देश की रक्षा में सिक्खों का बल ही आगे रहा है।

परमात्मा का बल आत्म-बल देता है और अपनी अस्मिता को अक्षुण्ण रखने योग्य बनाता है। इसके साथ ही वह माया व विकारों की कैद से भी मुक्त करता है, जिन्हें मनुष्य का सबसे बड़ा वैरी माना गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित भक्त रविदास जी की बाणी के अनुसार मृग, मछली, भंवरा, पतंगा और हाथी, इन सब में एक न एक विकार है, जिसकी आसक्ति के कारण उन्हें अपनी जान भी देनी पड़ जाती है। मनुष्य एक नहीं, पांच विकारों— काम, क्रोध,

लोभ, मोह, अहंकार का कैदी है। इन पांच विकारों के कारण उसका जीवन कैसा पराश्रित व दयनीय हो जाता है, इसका सहज ही अनुमान लग जाता है। मनुष्य दूसरों की अधीनता भी इन्हीं विकारों के कारण स्वीकार करता है और इन्हीं विकारों के कारण अपराध भी करता है। विकार उसे इतने निर्बल बना देते हैं कि वह स्वतन्त्रता व आत्मसम्मान जैसी बातों के बारे में सोच भी नहीं पाता। एक सिक्ख गुरु के मार्ग पर चल कर, गुरु की कृपा से विकारों को अपने वश में कर लेता है। गुरु का ज्ञान सिक्ख के अंदर जीवन के वास्तविक उद्देश्य की चेतना पैदा करता है और नाशवान संसार के मोह से उबारता है। विकारों को जीतना ही बल है और बन्धनों से स्वतंत्र होना है :

पंजे बधे महाबली करि सचा ढोआ॥
आपणे चरण जपाइअनु विचि दयु खड़ोआ॥
(पन्ना ११९३)

श्री गुरु अरजन साहिब ने कहा कि वास्तविक वीरता पांच विकारों को जीतने में है। जिसने परमात्मा की कृपा से विकारों को जीत लिया वह महाबली है। परमात्मा स्वयं उससे अपनी भक्ति कराता है और उसका बल, रक्षक, प्रतिपालक बन कर खड़ा होता है। इसका तात्पर्य है कि जिसने विकारों, माया के मोह से मुक्ति प्राप्त कर ली वही सच्ची स्वतन्त्रता का सुख भोगता है। परमात्मा उसके संग होता है, जिससे उसे किसी अन्य का आश्रित नहीं होना पड़ता। उसकी आवश्यकतायें सीमित हो जाती हैं। उसके जीवन में संयम व संतोष आ जाता है। वह हर्ष-शोक, मान-अपमान, प्रशंसा-निंदा, ऊंच-नीच से ऊपर उठ जाता है। जब वह जल में कमल जैसा निर्लिप्त हो जाये तब सहज की अवस्था बन जाती है जो जीवन-मुक्त होने का मार्ग प्रशस्त करती है। गुरबाणी के अनुसार आवागमन से मुक्त होना ही पराधीनता का अंत एवं वास्तविक मुक्ति है। इसके लिये 'गोसाई दा पहिलवानड़ा' अर्थात् गोसाईं का पहलवान अर्थात् परमात्मा से प्राप्त बल का धारक बनना पड़ता है। सच्ची स्वतन्त्रता का अधिकारी वही है।

गुरबाणी सच्ची स्वतन्त्रता की अवधारणा प्रस्तुत करती है। यह स्वतन्त्रता अधर्म, अन्याय, भेदभाव, आडंबर, पाखंड, अज्ञानता से है। इसके साथ ही स्वतन्त्रता अपने मन के विकारों, अवगुणों से भी है। यह स्वतन्त्रता तब पूर्ण होती है जब सिक्ख गुण धारण करता है और सत्य के साथ जीने का संकल्प लेता है। पूर्ण स्वतन्त्रता जीवन के उद्धार के लिये है, जो परमात्मा के भय में, परमात्मा की भक्ति व कृपा से आकार लेती है। इसमें स्वच्छंदता नहीं, संयम व आत्मानुशासन होता है। इससे सारे संसार को 'बेगमपुरा' बनाया जा सकता है। सिक्ख की स्वतन्त्रता जीवन-कल्याण का संपूर्ण निदान है। स्वतन्त्रता के नाम पर हो रही उद्दंडता, मनमानी और तानाशाही को रोकना है तो गुरमति की दृष्टि अपनानी होगी।

सिक्ख ढाडी संस्था : आरंभ और विकास

*-डॉ. दिलवर सिंघ **

अकाल पुरख के ढाडी : सिक्ख ढाडी संस्था का आरंभ श्री गुरु नानक साहिब जी से ही हुआ माना जाता है, क्योंकि गुरु साहिब अपने आप को अकाल पुरख का ढाडी बताते हैं और अपनी बाणी में फरमान करते हैं कि ''मैं कर्महीन था। मुझे ढाडी बना कर प्रभु ने वास्तविक काम में लगा दिया है और हुक्म किया है कि दिन-रात मेरा यश गायन करो। जब मैं प्रभु की उपमा करने लगा तो प्रभु ने अपनी हुज़ूरी में मुझे बुलाया और मुझे अपने नाम की सच्ची उपमा-गायन रूपी सिरपाओ देकर निवाजा तथा आत्मिक जीवन देने वाला भोजन (नाम) मुझे छकाया। मैं अब सिरपाओ पहन कर और भोजन छक कर शाश्वत सुख में हूं। इस 'नाम' सदका ही मुझे प्रभु की प्राप्ति हुई है।'' गुरु जी ने अकाल पुरख का ढाडी बन कर उसकी कीर्ति में तीन वारें उच्चारण की हैं — वार माझ, वार आसा और वार मलार। वैसे ढाडी परंपरा के आरंभ एवं विकास के बारे में चाहे कोई निश्चित समय मालूम नहीं होता, लेकिन सिक्ख ढाडी संस्था का आरंभ श्री गुरु नानक साहिब जी से ही माना जा सकता है। गुरु जी का वार माझ में फरमान है :

हउ ढाढी वेकारु कारै लाइआ ॥
राति दिहै कै वार धुरहु फुरमाइआ ॥
ढाढी सचै महलि खसमि बुलाइआ ॥
सची सिफति सालाह कपड़ा पाइआ ॥
सचा अंम्रित नामु भोजनु आइआ ॥
गुरमती खाधा रजि तिनि सुखु पाइआ ॥
ढाढी करे पसाउ सबदु वजाइआ ॥
नानक सचु सालाहि पूरा पाइआ ॥

(पन्ना १५०)

इस तरह प्रतीत होता है कि इस पउड़ी में श्री गुरु नानक साहिब जी ने ढाडी और उसके व्यवसाय की संपूर्ण परिभाषा बयान की हुई है। 'पउड़ी' से यह तात्पर्य है कि वार हमेशा पउड़ियों में गायन की जाती है। दूसरा यह तथ्य स्पष्ट होता है कि ढाडी अपने खसम या अन्नदाता की उपमा का ज़िक्र 'वार' में करता है या उसके द्वारा जंग के मैदान की गई प्राप्तियों का ज़िक्र 'वार' में होता है। तीसरा यह कि उसका काम दिन-रात अपने अन्नदाता की उपमा करना ही है। उसके अवगुणों को ज़ाहिर नहीं होने देना और गुणों को छिपाना नहीं। चौथा यह कि अन्नदाता खुश होकर अपने दर के गवैये ढाडी को वस्त्र, भोजन व धन आदि देकर सम्मान देता है और अपनी ख़ुशी का प्रकटावा करता है। पाँचवाँ मुख्य तथ्य यह भी है कि पहले ढाडी ने कुछ लेने के लिए अपने अन्नदाता की उपमा करनी है और प्राप्ति के बाद शुक्राने के तौर पर फिर उसकी कीर्ति को गायन

**गांव व डाकखाना : लुबाणा चक्क, जिला कैथल (हरियाणा) फोन : ९४१७३-०६३७१*

करना है। यही उस ढाडी को उसके खसम ने काम प्रदान किया हुआ है।

श्री गुरु नानक साहिब जी तो अकाल पुरख के ढाडी थे और उसी प्रकार आगे श्री गुरु नानक साहिब जी के भी ढाडी उनका यश गायन करते रहे और आज भी करते आ रहे हैं।

इसी प्रकार बाकी गुरु साहिबान ने भी अपनी बाणी में अपने आप को अकाल पुरख के ढाडी ही बयान किया हैं और उसकी कीर्ति की है। श्री गुरु अमरदास जी भी 'ढाडी' की परिभाषा देते हुए फरमान करते हैं कि ढाडी वह होता है जो अपने खसम को प्यार करता है और उसके दर पर उपस्थित होकर उसकी सेवा में लगा रहता है :

ढाढी तिस नो आखीऐ जि खसमै धरे पिआरु ॥
दरि खड़ा सेवा करे गुर सबदी वीचारु ॥
(पन्ना ५१६)

इसी पउड़ी में गुरु साहिब ने तीन बार और 'ढाडी' शब्द का प्रयोग किया है :

ढाढी दरु घरु पाइसी सचु रखै उर धारि ॥
ढाढी का महलु अगला हरि कै नाइ पिआरि ॥
ढाढी की सेवा चाकरी
हरि जपि हरि निसतारि ॥ (पन्ना ५१६)

श्री गुरु रामदास जी भी ढाडी के संबंध में श्री गुरु नानक साहिब जी वाला प्रसंग ही अपनी पउड़ी में इस्तेमाल करते हुए 'ढाडी' की अपने खसम के साथ एकात्मकता का प्रत्यक्ष प्रमाण देते हैं :

हउ ढाढी हरि प्रभ खसम का
हरि कै दरि आइआ ॥
हरि अंदरि सुणी पूकार ढाढी मुखि लाइआ ॥
हरि पुछिआ ढाढी सदि कै
कितु अरथि तूं आइआ ॥
नित देवहु दानु दइआल प्रभ
हरि नामु धिआइआ ॥
हरि दातै हरि नामु जपाइआ
नानकु पैनाइआ ॥ (पन्ना ९१)

इस पउड़ी में भी गुरु साहिब ने तीन बार 'ढाढी' (ढाडी) शब्द का प्रयोग किया है और ढाडी तथा प्रभु अर्थात् खसम के मध्य की निकटता का वर्णन किया है। फिर 'ढाढी' को उसकी माँग पूछ कर, उस माँग की पूर्ति कर इज्जत के साथ पोशाक आदि पहना कर भेजा गया बताया है और ढाडी को कीर्ति करने के लिए हुक्म दिया है।

श्री गुरु अरजन देव जी भी ढाडी को ताकीद करते हुए तथा उसकी उपमा करते हुए फरमान करते हैं कि वह अपने खसम के दर पर ही याचना करता है और उसने उसके दर का कभी भी त्याग नहीं करना :

ढाढी दरि प्रभ मंगणा दरु कदे न छोड़े ॥
(पन्ना ३२३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अकाल पुरख वाहिगुरु के ढाडियों— श्री गुरु नानक साहिब जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी और श्री गुरु अरजन देव जी की इक्कीस (२१) वारें दर्ज हैं। श्री गुरु अंगद देव जी के उच्चारण किये हुए सलोक इन वारों की पउड़ियों के साथ बाकी गुरु साहिबान के सलोकों के साथ दर्ज किये गए हैं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की उच्चारण की हुई कोई 'वार' नहीं, परन्तु वे भी खसम-प्रभु

के ढाडी ही थे। एक 'वार' गुरु-घर के कीर्तनिए भाई सता जी और भाई बलवंड जी की उच्चारण की हुई दर्ज है। बाईस वारों में से नौ वारें और पुरातन वारों की धुनियां दर्ज कर शीर्षक में ही संकेत दर्ज कर दिया गया है कि इस 'वार' को इस धुनी के अनुसार या इस तर्ज़ पर गायन किया जाये।

चाहे छठे, सातवें और आठवें गुरु साहिबान ने बाणी का उच्चारण नहीं किया, परन्तु वे भी अकाल पुरख के 'ढाडी' ही थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तो 'चंडी दी वार' बाणी का उच्चारण किया, जो श्री दसम ग्रंथ साहिब में दर्ज है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज वारों की सुर सहजता वाली है, जबकि 'चंडी दी वार' वीर- रस की सुर वाली है, जिसका समूचा विषय-वस्तु देवताओं एवं राक्षसों के आपसी युद्ध में अकाल पुरख की दैवी शक्ति 'चंडी' की दुर्बोध ताकत को इस्तेमाल करते हुए दिखाया गया है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की २२ वारों में से जिन नौ वारों पर पुरातन नौ धुनियां दर्ज हैं, उनका वर्णन इस प्रकार है :—

१. वार माझ की तथा सलोक महला १
मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की धुनी गावणी ॥

२. गउड़ी की वार महला ५
राइ कमालदी मोजदी की वार की धुनि उपरि गावणी

३. आसा महला १ ॥ वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुंडे अस राजै की धुनी ॥

४. गूजरी की वार महला ३
सिंकदर बिराहिम की वार की धुनी गाउणी

५. वडहंस की वार महला ४
ललां बहलीमा की धुनि गावणी

६. रामकली की वार महला ३ ॥
जोधै वीरै पूरबाणी की धुनी ॥

७. सारंग की वार महला ४
राइ महमे हसने की धुनि

८. वार मलार की महला १
राणे कैलास तथा मालदे की धुनि ॥

९. कानड़े की वार महला ४
मूसे की वार की धुनी

गुरु साहिब ने इन नौ वारों को इन पुरातन धुनियों पर गायन करने का आदेश किया है। ये वारें समाज में पहले से प्रचलित थीं। गुरु साहिब ने गायन की सुर वही रख कर उस अकाल पुरख की उपमा करने का हुक्म दिया है, क्योंकि इन पुरातन वारों में ज़र, जोरू और ज़मीन के लिए हुई दो पक्षों की आपसी जंगों में एक पक्ष की विजय और दूसरे पक्ष की पराजय का वर्णन मिलता है। जो पक्ष विजय प्राप्त कर लेता था, ढाडी फिर उसकी वार बना कर, उसके दर पर खड़े होकर गाते और इनाम प्राप्त करते थे। गुरु साहिबान ने तो अपनी वारों में अकाल पुरख का ही यश गायन किया है। दूसरा यह भी स्पष्ट था कि विजय सत्य पक्ष की ही होती रही है और झूठ की पराजय होती रही है। यहाँ लेख के अधिक विस्तृत होने के कारण हम इन वारों का और ज्यादा ज़िक्र नहीं करेंगे। लेख के इस पहले भाग में हमने सिक्ख गुरु साहिबान का अकाल पुरख

के दर के ढाडी होकर उसका यश गायन करने का वर्णन किया है। अब हमने गुरु-घर के ढाडियों का संक्षिप्त रूप से ज़िक्र करना है, जिन्होंने स्वयं वारें उच्चारण कर गुरु-घर की उपमा की और सम्मान प्राप्त किये।

गुरु-घर के दर के ढाडी : आरंभ से ही गुरु-घर में रागी, रबाबी, कीर्तनीए और ढाडी आदि सम्मानित किए जाते रहे हैं। भाई मरदाना जी ने अपना सारा जीवन श्री गुरु नानक साहिब जी की संगत में रबाब बजाने की सेवा में गुज़ारा। उनके बाद उनके सुपुत्र भाई सजादा जी तथा भाई रजादा जी ने गुरु-घर में रबाब की सेवा की और यह सेवा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रही। भाई सता जी और भाई राइ (राय) बलवंड जी ने भी गुरु-घर में कीर्तन की सेवा निभाई और गुरु-उपमा में एक 'वार' का उच्चारण किया, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है। गुरु-उपमा में 'वार' लिखने और गायन करने वाले ये दो पहले रबाबी थे। भाई गुरदास जी ने भी गुरु -उपमा में वारों की रचना की है। श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत के बाद जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब गुरुआई पर विराजमान हुए तो उन्होंने मीरी-पीरी की दो कृपाणें धारण कीं, सिक्ख सेना बनाई, श्री अकाल तख़्त साहिब स्थापित किया और सिक्खों में वीर-रस पैदा करने के लिए ढाडी वारों का गायन करवाया, जिसका ज़िक्र 'पंथ प्रकाश' में इस प्रकार किया गया है :

मिल ढाढी वारां पड़ै आइ।
सुन संगत सब मन मोद पाइ।
जो सुनकै काइर होहि बीर।
रण सजै अरिन सो धार धीर।
जो गुर के बार पसिंद आइ।
धुन उसकी गुरू ग्रंथ मांहि।
लिखवावत वारां केर आदि।
सब जानत सिआनो सिख तदाद।

भाई नत्था और भाई अब्दुल्ला ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की उपमा में 'वार' लिखी और उस 'वार' को ढड्ड (तानपूरा) एवं सारंगी या रबाब बजा कर गाया तथा सिक्खों में जोश भरा। उनके द्वारा गायन की गई वार की एक पउड़ी जो सिक्ख संगत के मुँह से खुद-ब-खुद सुनी जा सकती है, इस प्रकार है :

दो तलवारीं बधीआं,
इक मीरी ते इक पीरी दी।
इक अज़मत दी, इक राज दी,
इक राखी करे वज़ीर दी।
हिंमत बांहां कोट गढ़,
दरवाजा बलख बखीर दी।
कटक सिपाही नील नल,
मार दुसटां करे तगीर जी।
पग्ग तेरी, की जहांगीर दी?

जैसे हम पहले ज़िक्र कर आए हैं कि पहले जो वार-गायन गुरु साहिबान द्वारा किया जा रहा था, वह सहज रस अर्थात् शांत रस वाला था, लेकिन भाई नत्था और भाई अब्दुल्ला ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की महिमा का ज़िक्र वीर-रस में कर सिक्ख नौजवानों को जोश से भर दिया। 'गुर बिलास पातशाही छेवीं' में ज़िक्र है कि :

नथा ढड वजाइ अबदुला हथ रबाब लै।[१]

इन ढाडिओं द्वारा वारें गाकर भरे जाते जोश

का वर्णन 'सूरज प्रकाश' ग्रंथ में इस प्रकार किया गया है :

श्री हरिगोबिंद जोधा भारी।
हम तिस के चल जाहि भिखारी।
जो जिस समें आइ जसु कहै।
दरब तरंग बसन को लहै।
अबदुल नथा रण की वार।
करी बनावनि सकल सुधारि।
जिस संगर घालयो घमसान।
मारे सयद मुगल पठान ॥१०॥

इससे पता चलता है कि भाई नत्था ढड्ड बजाते थे और भाई अब्दुल्ला रबाब के माहिर थे। बाणी में भक्त नामदेव जी ने भी ढाडिओं का ज़िक्र किया है। गुरु साहिबान तो अपने आप को अकाल पुरख के ढाढी (ढाडी) ही बताते हैं। भाई नत्था और भाई अब्दुल्ला की ढड्ड व रबाब ने उन्हें श्री अकाल तख़्त साहिब तथा 'वार' गायन करने वाले पहले ढाडी होने का सम्मान गुरु-दर से दिलाया। ''यह भी कहा जाता है कि भाई अब्दुल्ला पर तो गुरु जी की इतनी कृपा थी कि वे खुद ही वारें रचित कर गुरु-दरबार में गाया करते थे।''[२] इन ढाडिओं को गुरु साहिब जैसा सम्मान देते थे, उसका वर्णन कवि संतोख सिंघ ने इस प्रकार किया है :

सुनि अबदुल ढाढी चलि आयो।
भए सुभट तिन को जसु गायो।
जिस के सुनति बीर रस जागे।
काइर सो पि लरे नहिं भागे ॥३०॥
निज सुभटानि सुनावनि कारन।
करहिं जंग जैसे बड दारुन।
अबिदुल को चाकर करि राखयो।
दरब दिवाइ मसंदनि पाखय ।३१।
बली तरंग दियो हित चरिबे।
सुभटनि वारि सुनावनि करिबे।
इमि दिन प्रति गुरू सैन सकेले।
संगति गन पहुंचहि करि मेले ॥३॥

यदि हम ढाडी की परिभाषा करें तो हमें पता चलता है कि ''ढाडी उसे कहा जाता है जो ढड्ड (ढढ) बजा कर योद्धाओं की वारें गायन करने अर्थात् यश गायन करने वाला हो।''[३]

'श्री गुरु ग्रंथ कोश' में भी ढाढी (ढाडी) के बारे में इस प्रकार बताया गया है कि ''ढढ बजाने वाले, जो पूर्व वीरों के समाचार गीतों में गाकर सुनाते थे, कथा गाते व वारें सुनाते थे। ढाडी वह होता है जो यश करने वाला, कीर्ति गायन करने वाला हो। ढाडी शब्द ढढ+आ, गुण+ई प्रते के संयोग से बना है।''[४].

अधिकांशत: ढाडी का सम्बन्ध एक विशेष प्रकार के साज 'ढढ' (ढड्ड) को एक ख़ास ढंग से बजाने और वीर-रसी वारें गायन करने से है तथा अपने इष्ट की या अन्न-दाता की उपमा गायन करनी उसका मुख्य कर्त्तव्य है। ढढ (ढड्ड) के साथ-साथ सारंगी बजाना भी लाज़िमी है और यह सारंगी ही ताल को सुर प्रदान करती है।

भाई नत्था और भाई अब्दुल्ला श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी द्वारा श्री गुरु नानक साहिब के दर पर मनोनीत किये गए पहले ढाडी थे। भाई नत्था और भाई अब्दुल्ला दोनों मुसलमान ढाडी थे और आपस में मौसेरे भाई थे तथा श्री अमृतसर ज़िले के गाँव सुरसिंघ के निवासी थे। ये दोनों श्री

गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के दरबार में वीर-रसी वारें सुना कर सिक्ख सैनिकों को उत्साहित किया करते थे। बाबा गुरदित्ता जी के विवाह के समय भी इन दोनों ने स्तुतिमय छंद गाए थे। गुरु जी के कीरतपुर साहिब जाते समय ये दोनों साथ गए और गुरु जी ने अपने अंतिम समय पर इन्हें अपने गाँव लौट जाने का लिए आदेश दिया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा तैयार की जा रही सिक्ख फ़ौज को उत्साहित करने में इन दोनों ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई और सिक्खों के मन में शक्ति-संचार करने में भी सहायता की।[५].

डॉ. गुरदेव सिंघ पंदोहल की नयी खोज के अनुसार भाई नत्थामल्ल श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शरण में आया और सिक्ख युद्धवीरों को उत्साहित करने के लिए वारें गाता रहा। वह गुरु जी के साथ नांदेड़ तक गया और गुरु जी के ज्योति-जोत समाने के समय नादेड़ में मौजूद था। उसने उस समय के पूरे हालात को 'अमरनामा' नामक फ़ारसी रचना में कलमबद्ध किया है। यह रचना गुरु जी के बाद के एक- आध वर्ष में लिखी गई प्रतीत होती है।[६].

'गुर बिलास पातशाही छेवीं के अनुसार जब १६४२ ई. में दीवाली से एक दिन पहले भाई बाबक का देहांत हो गया तो गायन की सारी ज़िम्मेदारी गुरु महाराज जी ने भाई नत्था मल्ल और भाई अब्दुल्ला दोनों भाइयों को सौंप दी :

श्री गुरू अबदुला तबै बुलायो।
करो क्रित श्री मुखो अलायो ॥५२०॥
अबदुल नथे क्रित सवारी ।
बाबक सुत सों मिलि हितकारी ।
अबदुला ढाडी वार लगावै।
घनो मदु मन भीतरि पावै ॥५२४॥७

भाई मरदाना जी, जो श्री गुरु नानक साहिब जी के रबाबी थे, के बाद उनके सुपुत्रों— भाई सजादा जी और भाई रजादा जी ने गुरु-घर में कीर्तन किया। फिर भाई सता जी और भाई बलवंड जी ने यह सेवा निभाई। फिर उनके पोते भाई कालू, भाई मामू, उनके बेटे पुत्र भाई मुंदा, भाई अमीर, भाई हाको आदि ने गुरु-घर में कीर्तन की सेवा की। फिर भाई हाको के पुत्र भाई गाम और भाई गाम के ताऊ के चार पुत्र— भाई वसावा, भाई वधावा आदि श्री दरबार साहिब श्री अमृतसर में सेवा निभाते रहे।[७]. ये सभी गुरु-घर के सम्मानित रबाबी थे।

इसी प्रकार गुरु-घर के ढाडिओं में भाई नत्था और भाई अब्दुल्ला, भाई मीर छबीला (मीर मुशकी) हुए है। भाई नत्था और भाई अब्दुल्ला की भांति भाई मीर छबीला भी सुरसिंघ गाँव के रहने वाले थे और शायरी करते थे तथा अपनी शायरी के माध्यम से किसी शख्सियत का खाका, रेखा-चित्र बहुत यथार्थ एवं सूक्ष्म ढंग से लिखते थे।

भाई मीर मुशकी एक बार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के दर्शन-दीदार के लिए आया, तो उनकी छवि को सजदा करते हुए जैसे ही उसने शेयर बोले, गुरु महाराज जी ने उसे अपने गले के साथ लगाते हुए कहा, ''मीर जादे! हम तुम्हारी शायरी से बहुत खुश हैं। तुमने हमारी प्रतिभा को, हमारी छवि को अपनी शायरी में खूब पिरोया है। जा आज से तुम हमारे ढाडी हो और

आज से गुरु-घर का तुम्हारे नाम मीर छबीला है। तुम्हारे परिवार में बहुत बड़े-बड़े संगीतकार पैदा होंगे।'' गुरु महाराज उस मीर की मीरास से आनंद-प्रसन्न होकर उसे मीरातों, बख्शिशों से मालामाल कर रहे थे।

सच्चे पातशाह जी के कहे वचन आने वाले समय में फलीभूत हुए। चुनांचि भविष्य में उनकी कुल ने बड़े-बड़े ढाडी और संगीतकार पैदा किये, जैसे कि भाई आतू, भाई पलासा, आदि। उनके एक वंशज भाई मुखतार गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब में कीर्तन करते रहे।[९]

एक विचार यह भी है कि भाई मीर छबीला श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार में भी ढाडी की सेवा निभाते रहे हैं। कुछ लोग यह कहते हैं कि भाई मीर मुशकी और भाई मीर छबीला दो अलग-अलग ढाडी थे, लेकिन यह बात उनके वारिसों के अनुसार सरासर गलत है।[१०]. भाई नत्था और भाई अब्दुल्ला के बाद बाबा बाघा और भाई मीहां, अपने समय के सिरमौर ढाडी हुए हैं। सिक्ख राज स्थापित हुआ तो इस गौरवमयी संस्था को आगे चलाए रखने के लिए इन भाइयों अर्थात्— भाई लक्ख दरिया, भाई जस दरिया, भाई मौज दरिया और भाई सुख दरिया ने अति महत्वपूर्ण योगदान दिया। 'पंथ प्रकाश' का कर्त्ता अपनी कलम द्वारा, भाई जस दरिया और अन्य ढाडिओं का वर्णन इन शब्दों के माध्यम से करता है :

अबदल जसदरिआ गुलजारा।
इह ढाडी मिल गावहि वारा।
कौण पुरष जो सुन कै वार।
सूरबीर न होइ उदार।
ऐसो चढै बीर रस तहै।
हथ तेग मुछ पर खुद अहै।
वकत दोइ गुर लाइ दीवान।
वारां राग सुनत मुंद ठान।[११]

गुरु-उपमा की वारें गायन करने और गुरु-दर पर उपस्थित रहने से ये ढाडी अंदर से भी प्रभु-प्रेम और प्रभु-नाम में भीगे हुए थे तभी गुरु साहिब द्वारा इन्हें सम्मान की बख्शिश होती थी। गुरु-दरबार की यह विशेषता सदा ही रही है कि यहाँ यदि अमृत वेले 'आसा की वार' का गायन रबाबी ढड्ड करते हैं तो अपरान्ह को ढाडी ढड्ड एवं सारंगी के साथ वीर-रसी वारें गाते हैं। ढड्ड की चोट पर सारंगी की लय योद्धाओं में वीर-रस पैदा करती है। गुरु साहिब का मिशन था कि खालसा ऐसी शख्सियत हो, जो संत भी हो और सिपाही के गुण भी धारण करे, जो करुणा रस में भी विचरण करे और वीर रस में भी, जो शस्त्र और शास्त्र दोनों का ज्ञाता हो, जो मीरी और पीरी को साथ लेकर चले। इन ढाडिओं में भी संत-सिपाही वाली वृत्ति थी। इस वृत्ति की एक उदाहरण सिक्ख इतिहास में से प्राप्त होती है :—

सिक्ख दौर में एक बार बहुत भारी सूखा पड़ा तो शेर-ए-पंजाब के कानों में किसी ने यह बात डाली कि वे अपने एक ढाडी बाबा बाघा से विनती करें कि वे कुछ करें और कुछ बूँदें बरस जाएँ। जब बाबा जी से विनती की गई तो वे प्रार्थना के लिए श्री दरबार साहिब के सरोवर में घुस गए और अरदास, विनती करने लगे :

धंन गुरू रामदास, भेज अंम्रित दी बूंद।

उनकी अरदास सुनी गई, छमाछम बारिश होने लगी, जिससे बाबा जी की महिमा पूरे शहर में जंगल की आग की भांति फैल गई। महाराजा रणजीत सिंघ खुश होकर, हाथी की सवारी लेकर बाबा बाघा के घर आए और जाते समय उन्हें बाईस गाँव ईनाम में देने के रूप में एक पटा उनके नाम कर गए। महाराजा रणजीत सिंघ गुरु-घर के रागियों, रबाबियों, ढाडिओं का प्राय: उत्साहवर्धन करते रहते थे। त्योहार आदि पर उन्हें तोहफे देकर सम्मानित करते थे।[१२]

'पंजाब कोश' के अनुसार, पंजाब में जैसे पुरातन वारों के संकेत मिलते हैं उसी तरह ढाडिओं के नाम भी मिल जाते हैं।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने ढाडिओं की गायन-शैली को बहुत उत्साहित किया। वे हर शाम को जो दीवान सजाते थे, उसमें ढाडी बहादुरी के किस्से सुना कर सिक्खों में जोश भरते थे। गुरु-काल के बाद भी ढाडी संस्था जारी रही है। कुछ ढाडिओं के नाम इस प्रकार मिलते हैं— बाबा बाहू, भाई मोदन ढाडी, भाई मौला बख़्श आदि। सिंघ सभा लहर ने अनेक ढाडिओं को सरप्रस्ती दी, जैसे भाई लाल सिंघ, भाई किशन सिंघ कड़तोड़, भाई सोहण सिंघ भीला, भाई सोहण सिंघ घुक्केवालिया, भाई निरवैर पाल, भाई ऊधम सिंघ और भाई जुझार सिंघ।

बाद में ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल, भाई दया सिंघ दिलबर, ईदू ख़ान, देश राज लचकाणी आदि अनेक ढाडी जत्थों ने इस संस्था को आगे बढ़ाया।[१३]

सिक्ख पंथ की अमीर ढाडी परंपरा को और भी प्रफुल्लित करने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से गुरू की वडाली, जिला श्री अमृतसर में एक ढाडी कॉलेज स्थापित किया गया है, जो कि बहुत ही प्रशंसाजनक कार्य है। आशा है कि इस कॉलेज में से सिक्ख कौम को बहुत ही प्रसिद्ध ढाडी प्राप्त होंगे।

सहायक-सामग्री :

१. गुर बिलास पातशाही छेवीं, पृष्ठ १००

२.http://en.wikipedia.org/w/index.php?title= Dhadiandoldid=661255383

३. भाई कान्ह सिंघ नाभा, गुरशबद रत्नाकर महान कोश, २०११, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, पृष्ठ ५६५.

४. हज़ारा सिंघ ज्ञानी, श्री गुरु ग्रंथ कोश, २००८, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, पृष्ठ ३३७

५. डॉ. रतन सिंघ (जग्गी), २००५, सिक्ख पंथ विश्वकोश, भाग द्वितीय, गुररतन पब्लिशर पटियाला, पृष्ठ १००४

६. उक्त, भाग प्रथम, पृष्ठ ५३

७. उद्धृत, बलबीर सिंघ कंवल, २०१०, पंजाब के प्रसिद्ध रागी-रबाबी, सिंघ ब्रादर्स, श्री अमृतसर, पृष्ठ ८३

८. उक्त, पृष्ठ ७८

९. उक्त, पृष्ठ ८४

१०. उक्त, पृष्ठ ३८

११. उद्धृत, बलबीर सिंघ कंवल, २०१० वही, पृष्ठ ३६

१२. उक्त, पृष्ठ ३६-३७

१३. रछपाल सिंघ, (गिल्ल), (मुख्य संपादक), पंजाब कोश, ट से ड़, २००४, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, पृष्ठ ३४-३५

गुरुद्वारा गुरु का बाग का मोर्चा

*-स. मनजीत सिंघ**

श्री अमृतसर जिले की अजनाला तहसील के गाँव घुक्केवाली में गुरुद्वारा गुरु का बाग सुस्थित है। इस धरा को श्री गुरु अरजन देव जी और श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब जी का चरण-स्पर्श प्राप्त हुआ है, जिनकी याद में दो गुरुद्वारा साहिबान बने हुए हैं। निकट ही गुरुद्वारे की मालिकाना कुछ ज़मीन है, जिस पर उस समय बाग था।

सिक्ख राज के समय सिक्ख सरदारों और क्षेत्रीय संगत ने एक उदासी सिक्ख को इस गुरुद्वारे की सेवा के लिए महंत नियुक्त कर दिया। उसके बाद उदासी सिक्खों की महंती चलती रही। जब गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर शुरू हुई तो उस समय गुरुद्वारा गुरु का बाग का महंत सुंदर दास था। वह हद दर्जे का चरित्रहीन, नशेबाज़ और शराबी था। महंत ने कई बदचलन औरतें अपने पास रखी थीं। संगत को महंत के आचरण के बारे में काफ़ी शिकायतें थीं। यही शिकायतें जब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पास पहुँची तो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने ज़िला कमेटी प्रधान को लिख कर भेजा कि इस सम्बन्ध में वह महंत से मिल कर गुरुद्वारे के प्रबंध में सुधार करवाए।

इस संबंध में ३१ जनवरी, १९२१ ई. को गुरुद्वारा गुरु का बाग में एक भारी विशाल पंथक सभा हुई, जिसमें महंत सुंदर दास से कहा गया कि वह किसी भी स्त्री के साथ अयोग्य सम्बन्ध न रखे। एक स्त्री के साथ 'अनंद' (विवाह) करवा ले। अमृत छक कर सिंघ सज जाये और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधीन होकर सेवा करे।

महंत ने विशाल पंथक सभा में संगत की मौजूदगी में उक्त शर्तें मान लीं और इकरारनामे पर दस्तखत कर दिए। इसी सभा में गुरुद्वारे के प्रबंध के लिए ग्यारह सदस्यीय गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी बनाई गई। महंत इस कमेटी के अधीन रह कर सेवा करनी मान गया। ८ फरवरी, १९२१ ई. को महंत ने श्री अकाल तख़्त साहिब पर उपस्थित होकर अमृत छक लिया। उसका नाम जोगिंदर सिंघ रखा गया। एक 'इशरी' नामक स्त्री जिसने अपना नाम गिआन कौर रख लिया, के साथ उसने अनंद कारज करवा लिया। तत्पश्चात् वह गुरुद्वारा कमेटी के अधीन काम करने लगा।

जब अकालियों के विरुद्ध अंग्रेज़ सरकार ने सख्ती करनी आरंभ की तो इस महंत को मनमानियां करने का मौका मिल गया। महंत पहले की तरह रंगरलियां मनाने लगा। उसके इस व्यवहार के कारण शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने २३ अगस्त, १९२१ ई. को जत्था भेज

*बी-२/८, अशोका अपार्टमेंट, सेक्टर-१२, द्वारिका, नई दिल्ली-११००७८, फोन : ९८११६-१८०८९

कर गुरुद्वारे का प्रबंध संभाल लिया। महंत ने सरकार से मदद माँगी। पुलिस कप्तान ने सारी स्थिति का जायज़ा लेकर गुरुद्वारे पर अकालियों का कब्ज़ा होने संबंधी पुष्टि कर दी। फरवरी, १९२२ ई. में महंत के गुज़ारे के लिए १२० रुपए मासिक देना निश्चित किया गया और श्री अमृतसर में एक रिहायशी मकान उसे दिया गया। यह सब कुछ उसने सहर्ष स्वीकार कर लिया। महंत ने गुरुद्वारे का प्रबंध तो पंथ के हवाले कर दिया था, मगर गुरुद्वारा साहिब के नाम लगी ज़मीन तथा गुरु का बाग अपने कब्ज़े में रख लिया। जब से यह गुरुद्वारा साहिब शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधीन हुआ था, तब से ही गुरु का लंगर शुरू हुआ था। लंगर के लिए ईंधन गुरुद्वारे के साथ लगती ज़मीन में खड़े पेड़ व झाडियों में से काट कर लाया जाता था।

९ अगस्त, १९२२ ई. को गुरुद्वारा गुरु का बाग के साथ लगती ज़मीन में से पाँच अकालियों, जो एक दिन पहले ईंधन काट कर लाये थे, को श्री अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर के हुक्म से पुलिस ने लकड़ी चोरी करने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिया। इनका चालान अदालत में पेश कर दिया। अदालती कार्यवाही पूरी करने के लिए गुरुद्वारा साहिब के महंत से एक रिपोर्ट १० अगस्त को थाने में दर्ज करवा ली गई कि गुरुद्वारा प्रबंध के कर्मचारियों (अकालियों) ने मेरी ज़मीन में से लकड़ी चोरी की है। अदालत ने उन्हें छः माह की कैद और ५०-५० रुपए जुर्माने की सजा दी।

अगले दिन गुरुद्वारा गुरु का बाग के चारों तरफ पुलिस की सुरक्षा बिठा दी गई। अकाली उसी तरह गुरु के लंगर के लिए लकड़ियां काटते रहे। पुलिस चुपचाप रही, लेकिन २२ अगस्त १९२२ ई. से एकदम गिरफ़्तारियों का सिलसिला शुरू हो गया। पहले लकड़ियां काटने वाले सिक्ख पकड़ लिए, फिर गुरुद्वारे साहिब में सेवा करने वाले चार सिक्ख गिरफ़्तार किये गए। मि. डंट डिप्टी कमिश्नर श्री अमृतसर २५ अगस्त, १९२२ ई. को शिमला से ख़ास हिदायतें लेकर श्री अमृतसर पहुँच गया और मारपीट का सिलसिला शुरू हो गया। २६ अगस्त, १९२२ ई. को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मीटिंग कर रहे कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य स. महिताब सिंघ, प्रधान स. भगत सिंघ, स. जसवंत सिंघ महासचिव, प्रो. साहिब सिंघ उप सचिव, स. सुरमुख सिंघ झबाल प्रधान अकाली दल, मास्टर तारा सिंघ, बाबा केहर सिंघ, स. रवेल सिंघ पकड़ लिए गए। सरकार ने गुरुद्वारा गुरु का बाग के लिए यह नीति धारण की कि जो भी सिंघ लकड़ियां लेने या वैसे भी आए, उस पर लाठी-डंडों की बरसात की जाये।

सिंघों ने भी श्री अकाल तख़्त साहिब के सामने भरे दीवान में एलान किया कि ''गुरुद्वारा गुरु का बाग कौम का स्वामित्व है। अगर सरकार ने अपना हस्तक्षेप न छोड़ा तो इसी प्रकार शांतमयी आंदोलन जारी रहेगा।''

२७ अगस्त, १९२२ ई. को गुरुद्वारा गुरु का बाग गए जत्थे को श्री अमृतसर में मार्च करने के लिए कहा गया। उन्हें रास्ते में लाठियों से पीटकर गंभीर रूप से घायल कर दिया गया। गुरुद्वारा गुरु का बाग जाने वाली सभी मार्गों की नाकाबंदी कर

दी गई। निकटवर्ती गाँवों में भी सिक्खों के समर्थकों को मारपीट की गई और उनसे लंगर-रसद-पानी छीन लिया। और तो और खालसा कॉलेज श्री अमृतसर का एक प्रोफ़ेसर, जो परिवार सहित गुरुद्वारा गुरु का बाग की तरफ जा रहा था, को महिलाओं के सामने बुरी तरह से पीटा गया। श्री अमृतसर जाने वाली गाड़ियों एवं मोटरों को रोक कर सिक्खों को नीचे उतारा गया और उन्हें गिरफ़्तार किया गया। श्री अमृतसर के आस-पास दूर-दूर तक मार्गों-घाटों पर पुलिस तैनात कर दी गई। इस मारपीट का इंचार्ज एक गोरा पुलिस आफिसर बी. टी. था।

इन पाबंदियों के बावजूद सिक्ख श्री अमृतसर पहुँचते रहे और प्रतिदिन श्री अकाल तख़्त साहिब से सिक्खों का एक जत्था गुरुद्वारा गुरु का बाग जाता रहा। इसके अलावा एक छोटा जत्था लकड़ी काटने के लिए भी भेजा जाता रहा। पुलिस दोनों ही जत्थों के सिक्खों को बेदर्दी से पीटती थी और तब तक उन पर लाठियां बरसाती रहती थी, जब तक एक- एक सिक्ख बेहोश नहीं हो जाता था। इन्हीं दिनों पुलिस ने गुरुद्वारा गुरु का बाग के आस-पास के खेतों में काम करते सिक्खों को भी अपने जुल्म का शिकार बनाया। इस सरकारी जुल्म से शहीद होने वाले पहले दो सिंघ— स. भगत सिंघ और स. तारा सिंघ पिता-पुत्र थे, जिन्हें गाँव टीरा के खेतों में शहीद कर दिया गया।

सिक्खों के जत्थे श्री अकाल तख़्त साहिब से शांतमयी रहने का प्रण लेकर गुरुद्वारा गुरु का बाग की तरफ जाते। सरकार ने बहुत-सी पुलिस एक अंग्रेज़ आफिसर बी. टी. को देकर सिक्खों का मुकाबला करने के लिए भेज दिया। पुलिस ने शांतमयी एवं निहत्थे सिक्खों पर, (जो सतिनामु वाहिगुरु का जाप करते हुए जा रहे थे) ऐसे हृदयबेधक अत्याचार किये जिनके समाचार पढ़ कर रौंगटे खड़े हो जाते हैं। सिक्खों को लाठियों से पुलिस बहुत बुरी तरह से पीटती और फिर घायल एवं नीचे गिरे हुए सिक्खों पर घोड़े चढ़ाए जाते। इस मोर्चे में घटित होने वाली घटनाओं को देख कर प्रसिद्ध ईसाई पादरी श्री सी. एफ. एंड्र्यूज ने कहा था— ''ईसाई लोग एक ईसा की कुर्बानी पर गर्व करते हैं, लेकिन मैंने यहाँ सैकड़ों ईसा सूली पर चढ़ते हुए अपनी आँखों से देखे हैं।''

अंततः ९ सितंबर, १९२२ ई. को पुलिस ने श्री अमृतसर मार्ग में पड़ती चौकी उठा ली, राह में की जाती मारपीट बंद कर दी और जत्था सीधे गुरुद्वारा गुरु का बाग पहुँचता। पुलिस जत्थे को गुरुद्वारा गुरु का बाग पहुँचने से रोकने का यत्न करती। इस उद्देश्य के लिए लाठियों से पीट कर तितर-बितर करने का यत्न करती। जत्थे के सिंघ अडिग रहकर एक ही जगह पर खड़े हो जाते और 'वाहिगुरु-वाहिगुरु' कहते हुए मार खाते रहते। पुलिस खीझ कर और अधिक अत्याचार करती। कईयों के सिर फट जाते। कई बेहोश होकर गिर जाते, लेकिन कोई मैदान में से भाग कर न जाता।

इस अमानवीय मारपीट से पूरे देश में अंग्रेज़ सरकार के विरुद्ध नफ़रत का तूफ़ान उठ खड़ा हुआ। हर तरफ़ से उन्हें दुत्कारा जा रहा था। जब पादरी सी. एफ. एंड्र्यूज ने जाकर मौका देखा तो

वह अकालियों के सभ्य व्यवहार से बहुत प्रभावित हुआ। उसने लेफ्टिनेंट गवर्नर को पुलिस की जुल्मी कार्यवाही से अवगत करवाया और उसे खुद जाकर हालात देखने की प्रेरणा दी। सर एडवर्ड मैकलागन गवर्नर १३ सितंबर, १९२२ ई. को गुरुद्वारा गुरु का बाग पहुँचा और मारपीट बंद करवाई।

२२ अक्तूबर को सूबेदार मेजर स. अमर सिंघ की जत्थेदारी में एक सौ पेन्शनी फौजियों का जत्था गिरफ़्तार होने के लिए गुरुद्वारा गुरु का बाग गया। इस जत्थे का बाहरी रूप-रंग निराला था— गले में हार, सिर पर सेहरा, एक जैसी वर्दी। फ़ौजी ढंग से मार्च करता हुआ यह जत्था आलौकिक दृश्य प्रस्तुत कर रहा था। दूसरे दिन इन फौजियों में से २६ को छः माह बिना मशक्कत कैद और सौ-सौ रुपए जुर्माना हुआ। शेष ७४ को अदालत से दो-दो वर्ष की कैद बा-मशक्कत और सौ-सौ रुपए जुर्माने की सजा मिली। इन फौजियों ने अपने सामूहिक बयान में कहा था— ''हमने दूर-दराज स्थानों पर परदेसों में जाकर अति कठिन समय में कई कष्ट सहन कर अंग्रेज़ सरकार की तरफ से कई लड़ाईयां लड़ी हैं। हमारे में से लगभग प्रत्येक को बहादुरी दिखाने के बदले में मेडल मिले हैं। आज सरकार हमारे धर्म-कर्म में दख़ल दे रही है और हमारे भाइयों के साथ अमानवीय व्यवहार कर रही है। अपने धर्म और गुरुद्वारों की आज़ादी की ख़ातिर जेल जाते हुए हम अपने आप को सौभग्यशाली समझते हैं।

एक अन्य जत्था पूर्व फौजियों, पेन्शनियों का गिरफ़्तार हुआ। इस जत्थे को श्री अमृतसर से विशेष रेलगाड़ी के माध्यम से अटक के किले की तरफ ले जा रहे थे कि रास्ते में गुरुद्वारा पंजा साहिब के प्रबंधकों और वहाँ की संगत भाई करम सिंघ व भाई प्रताप सिंघ के नेतृत्व में जत्थे के सिंघों को प्रशादे छकाने के लिए हसन अब्दाल के रेलवे स्टेशन पर रेल की पटरी पर बैठ गई। स्टेशन मास्टर ने रेलवे के बड़े अधिकारियों से रेलगाड़ी को रोकने की आज्ञा माँगी जो उन्होंने नहीं दी। सिक्ख संगत रेल की पटरी पर धरना देकर बैठ गई और कहा कि हम अपने भूखे-प्यासे वीरों को परशादा छकाए बिना रेलगाड़ी आगे नहीं जाने देंगे। स्टेशन मास्टर ने बहुत आग्रह किया कि सिक्ख संगत रेल पटरी से उठ जाए, लेकिन उसकी कोई पेश न गई। रेलगाड़ी पूरी रफ़्तार के साथ आई। भाई करम सिंघ शहीद हो गए और भाई प्रताप सिंघ रेलगाड़ी के पहियों में लपेटे हुए थे कि गाड़ी रुक गई। भाई प्रताप सिंघ, जो अभी जीवित थे, को गाड़ी के नीचे से निकालने के यत्न शुरू हुए तो उन्होंने कहा, ''पहले मेरे भूखे-प्यासे वीरों को परशादा छका लो, फिर मुझे बाहर निकालना। ऐसा न हो कि रेलगाड़ी चली जाये और हमारा प्रण अधूरा रह जाये।'' सब सिंघों को परशादे छका कर भाई प्रताप सिंघ को अति गंभीर अवस्था में गाड़ी के नीचे से निकाला गया, जो थोड़ी देर बाद शहादत प्राप्त कर गए। ३० अक्तूबर को दुष्ट हाकिमों ने रेलगाड़ी के चालक को गाड़ी रोकने के दोष में नौकरी से निकाल दिया था।

इस मोर्चे में हजारों सिंघ घायल हो गए और

बहुत-से शहीद भी हुए। इन शहीदों में एक स. प्रिथीपाल सिंघ (जत्थेदार अकाली जत्था लायलपुर) भी थे, जो ५ सितंबर की मारपीट से गंभीर रूप से घायल हो गये थे। उनके जिस्म पर १०० से अधिक ज़ख्मों के निशान थे। गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे में सरकार की तरफ से सख्ती बरतने वाले आफिसरों में से पुलिस आफिसर बी. टी. बेरहमी के साथ मारपीट करने में ज़्यादा बदनाम हुआ। कई वर्षों के बाद मालवा क्षेत्र से संबंधित बहादुरों— स. बचन सिंघ लोहाखेड़ा, स. भोला सिंघ, स. करतार सिंघ छीनीवाल आदि ने इसे सुनाम के निकट समीप गाँव चट्ठे, जहाँ इसकी कोठी थी, में गोली का निशाना बना कर इस कौमी अपमान का बदला लिया था।

जब सरकार ने देखा कि अकाली लहर में भूतपूर्व सैनिक भी गिरफ़्तारियाँ देने लगे हैं तो सरकार ने इस मोर्चे को ख़त्म कराने की सोची। गुरुद्वारा गुरु का बाग के आज़ादी से सम्बन्धित आंदोलन के दौरान शासन द्वारा मारपीट करने तथा गिरफ़्तारियाँ देने का सिलसिला १७ नवंबर, १९२२ ई. को थम गया। सर गंगा राम इंजीनियर लाहौर ने महंत से ज़मीन ठेके पर कागज़ों में ले ली। उसने सरकार को लिख कर दिया कि मुझे पुलिस की ज़रूरत नहीं और न ही मैं सिंघों को गुरु के लंगर के लिए लकड़ियां काटने से रोकना चाहता हूँ।

१७ नवंबर, १९२२ ई. तक गिरफ़्तारियों की संख्या ५६०५ तक पहुँच गई थी, जिनमें ३५ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य थे। इस प्रकार १७ नवंबर, १९२२ ई. को गुरुद्वारा गुरु का बाग की आज़ादी का मोर्चा फतह हो गया। मई, १९२३ ई. में गुरुद्वारा गुरु का बाग के कैदी सरकार ने रिहा कर दिए। गुरुद्वारा गुरु का बाग के मोर्चे ने सिक्ख इतिहास को दोहरा दिया। सिंघों के शांतमयी मोर्चे को देख कर दुनिया दंग रह गई।

सहायक पुस्तक-सूची :

१. *अमर खालसा,* स.करम सिंघ हिस्टोरियन, शि.गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर।

२. *सिक्ख इतिहास,* भाग दूसरा, प्रो. करतार सिंघ, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर।

३. *मोर्चा गुरु का बाग,* गुरमति मिशनरी कॉलेज।

४. *अंम्रितसरु सिफती दा घरु,* जंग सिंघ ज्ञानी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर।

५. *संखेप सिक्ख इतिहास,* पिआरा सिंघ पदम

६. *सिक्ख तवारीख,* भाग तीसरा डॉ. हरजिंदर सिंघ दिलगीर।

७. *पंजाब दी वीर परंपरा,* लाल सिंघ ज्ञानी।

८. *सिक्ख इतिहास,* भाग दूसरा, खुशवंत सिंघ

९. श्री अंम्रितसर जी दे दर्शन इशनान और ५०० साला दी ऐतिहासिक डायरेक्टरी, स. सतनाम सिंघ खालसा।

१०. *पंजाब,* संपादक डॉ. फौजा सिंघ।

सन् 1947 — सिक्ख और पंजाब का बँटवारा

-डॉ. किरपाल सिंघ (दिवंगत)

सिक्खों में इस बात की आम चर्चा है कि सिक्खों ने सन् १९४७ में किसी ठोस नीति को नहीं अपनाया, जिस कारण सिक्खों का स्वतंत्र राज्य स्थापित न हो सका। सन् १९४७ की नीति को समझने के लिए सन् १९४७ और इससे पहले पंजाब के हालात का अध्ययन करना अति आवश्यक है। सन् १९२१ की मर्दुमशुमारी की रिपोर्ट के अनुसार पंजाब में मुसलमानों की जनसंख्या कुल आबादी में से लगभग ५५% और १९४१ ई. की मर्दुमशुमारी की रिपोर्ट के अनुसार ५७% थी। प्रत्यक्ष रूप से यह सिक्खों और हिंदुओं से बहुत कम संख्या में अधिक थी। इससे सांप्रदायिक समस्या तनावग्रस्त बनी हुई थी। आर्थिक रूप से हिंदुओं और सिक्खों की हालत मुसलमानों से बेहतर थी। हिंदू व्यापार, बैंकों तथा कारखानों के मालिक थे और अपने क्षेत्रों में छाए हुए थे। पश्चिमी पंजाब और केंद्रीय पंजाब में सिक्ख बड़े ज़मींदार थे और ४०% मालिया देते थे। मुसलमान हिंदुओं और सिक्खों के आर्थिक दबदबे से परेशान थे। हिंदुओं और सिक्खों ने सामुदायिक पुरस्कार (Communal Award) द्वारा मुसलमानों को दिए अलग प्रतिनिधित्व और सीटें आरक्षित रखने की विरोधता की, क्योंकि मुसलमानों को विधान मंडल में ५१% सीटें देकर कानूनी तौर पर बहुसंख्या दी गई थी। हिंदू लगभग ३०% थे। उन्होंने यह दलील दी कि बहुसंख्यक फिरके के लिए सीटें आरक्षित नहीं रखनी चाहिए तथा किसी अल्पसंख्यक फिरके को उनकी आबादी के मुकाबले कम प्रतिनिधित्व नहीं दिया जाना चाहिए और न ही एक अल्पसंख्यक कौम को हानि पहुँचा कर दूसरी अल्पसंख्यक कौम को ज्यादा महत्ता दी जानी चाहिए। सिक्खों की आबादी लगभग १३% थी, परन्तु वे ज़मीन का मालिया और पानी-कर का ४०% अदा करते थे तथा फ़ौज में ज़्यादा योगदान देते थे। वेटेज़ उन्हें २०% प्रतिनिधित्व दिया गया था। उनकी माँग थी कि उन्हें हर प्रकार से महत्त्व दिया जाये, जैसे मुसलमानों को उन प्रांतों में दी गई है, जहाँ वे अल्पसंख्या में हैं।

मुस्लिम लीग के लाहौर प्रस्ताव (सन् १९४० ई.), जिसे पाकिस्तान प्रस्ताव के समानार्थक समझा जाता है, ने यह स्पष्ट बताया कि मुस्लिम राज्य (पाकिस्तान) में भौगोलिक रूप से उनके साथ लगते मुस्लिम बहुसंख्या वाले हिस्सों का शामिल होना था, जिन्हें

प्रदेशों में बाँटा जा सके और जहाँ ज़रूरत हो वहाँ उनकी क्षेत्रीय समानता की जा सके। पाकिस्तान में मुस्लिम बहुसंख्या वाले राज्य आने थे, जैसे पंजाब, सिंध, उत्तर-पश्चिमी सरहदी सूबा आदि। सिक्खों की बहुसंख्या पंजाब में थी। ये किसी तरह भी पाकिस्तान में नहीं जाना चाहते थे।

चीफ़ खालसा दीवान, श्री अमृतसर के संस्थापक, यूनियनिस्ट सरकार के एक प्रसिद्ध मंत्री, एक बुद्धिमान सिक्ख नेता (जिनका देहांत १९४१ ई. में हुआ) स. सुंदर सिंघ मजीठिया ये पहले सिक्ख थे जिन्होंने यह अनुभव कर लिया था कि पाकिस्तान का निष्कर्ष यह निकलेगा कि सिक्खों को मुसलमानों से अलग रास्ता अपनाना पड़ेगा। खालसा नेशनलिस्ट पार्टी, जिसके वे नेता थे और मुस्लिम लीग के पाकिस्तान के प्रस्ताव से केवल एक सप्ताह पश्चात् यह प्रस्ताव पारित किया गया, जिसमें कहा, ''मुस्लिम लीग ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी जिस कारण सिक्खों को मुसलमानों से अलग रास्ता इख्तियार करना पड़ेगा। जिनके साथ खालसा नेशनल पार्टी प्रांत और सिक्खी के हितों के लिए प्रांतीय खुदमुख्तारी के काल से ही अर्थात् १९३७ ई. से ही सहयोग करती आ रही है। यह सोच किसी व्यक्ति के लिए निर्लज्जता की हद होगी कि सिक्ख एक दिन के लिए भी किसी एक फिरके (मुसलमान) के अलग सांप्रदायिक राज्य को उस पंजाब की धरती, जो न केवल उनकी मातृ-भूमि है, बल्कि पवित्र धरती है, पर सहन कर सकेंगे।'' पंजाब में कानून निर्मित असेंबली १९२१ ई. से आरंभ हुई। उस समय से लेकर १९४७ ई. तक यूनियनिस्ट पार्टी का शासन रहा, जो मुसलमानों, हिंदुओं और सिक्खों की संयुक्त पार्टी थी। यूनियनिस्ट पार्टी का सिद्धांत था कि सभी कौमें मिल कर रहें, तभी पंजाब सफलता हासिल कर सकता है। सर फज़ल हुसैन मुसलमानों की तरफ से, छोटू राम हिंदुओं की तरफ से तथा सिक्खों की तरफ से स. सुंदर सिंघ मजीठिया इसके नेता थे।

१९४६ ई. का चुनाव पंजाब के इतिहास में मोड़ लाने वाला सिद्ध हुआ। मुस्लिम लीग, जो पाकिस्तान की समर्थक थी, ने पंजाब विधान सभा की ८५ सीटों में से ७३ सीटों पर विजय प्राप्त की। यूनियनिस्ट पार्टी ने ९४ सीटों पर चुनाव लड़ा और केवल १९ सीटें हासिल की। मुस्लिम लीग ने ७६.२६% और यूनियनिस्ट पार्टी ने २४.६१ प्रतिशत मत प्राप्त किये। १९४६ ई. के चुनाव ने यह बात स्पष्ट कर दी कि पंजाब के मुसलमान पूर्ण रूप से मुस्लिम लीग के पीछे हैं और वे पंजाब को पाकिस्तान का एक प्रांत देखना चाहते हैं। इस सूरत में पंजाब के हिंदू और सिक्ख पाकिस्तान में आ जाते थे। इससे बचने के लिए सिक्खों ने विशेष तौर पर और हिंदुओं ने आम तौर पर पंजाब के विभाजन पर ज़ोर दिया। मार्च, १९४७ ई. में रावलपिंडी, मुलतान एवं अटक

जिलों में भयानक सांप्रदायिक फ़साद हुए, जिनमें बहुत-से सिक्ख तथा हिंदू मारे गए। इन भयानक सांप्रदायिक फ़सादों, विशेष रूप से रावलपिंडी ज़िले के फ़सादों के बारे में माउंटबेटन ने इंग्लैंड गुप्त रिपोर्ट में लिखा कि गाँवों के गाँव इस प्रकार नष्ट किये गए हैं जैसे किसी हवाई जहाज़ से बमबारी की गई हो। इन सांप्रदायिक फ़सादों से प्रभावित होकर और सिक्खों के ज़ोर देने पर कांग्रेस ने भी ८ मार्च, १९४७ ई. पंजाब के बँटवारे की माँग का प्रस्ताव पारित कर दिया।

कई लोगों की यह धारणा है कि सिक्ख नेताओं की कोई ठोस और रचनात्मक नीति नहीं थी। वे केवल कांग्रेस के पिछलग्गू थे। यह बात उचित नहीं लगती। १९३१ ई. से लेकर १९४७ ई. तक जितनी भी नीतियां सिक्ख नेताओं की तरफ से पेश हुईं, विशेष रूप से अकालियों की तरफ से, उनमें पंजाब के पुनर्गठन पर ज़ोर था, ताकि सिक्ख मुसलमानी गलबे से स्वतंत्र हो सकें। आज़ाद पंजाब स्कीम, सिक्ख स्टेट, हिंदू-सिक्ख सूबा ये सभी योजनाएँ केवल इस बात पर आधारित थीं कि किसी तरह पंजाब का विभाजन इस ढंग से हो कि सिक्ख मुसलमानों की बहुसंख्या के गलबे से मुक्त हों। १८ अप्रैल, १९४७ ई. को मास्टर तारा सिंघ और ज्ञानी करतार सिंघ लार्ड माउंटबेटन से मिले। इसकी रिपोर्ट देते हुए लार्ड माउंटबेटन ने इंग्लैंड में लिखा कि पाकिस्तान बनने की सूरत में यदि पंजाब का बँटवारा न किया गया, तो पंजाब में से खानाजंगी आरंभ हो जायेगी। आखिर में सिक्खों को सफलता मिली और १९४७ ई. में इस बात को मान कर पंजाब का विभाजन पूरबी व पश्चिमी पंजाब में कर दिया गया। मुसलमानों की बहु-संख्या पश्चिमी पंजाब में रह गई और हिंदू एवं सिक्ख बहुसंख्या पूरबी पंजाब में हो गई।

सिक्ख स्टेट का मसला : लार्ड माउंटबेटन ने बँटवारा योजना की मुख्य धारायें सभी प्रांतीय गवर्नरों को भेजीं। पंजाब के गवर्नर सर ऐवन जैनकन्ज़ ने उनके साथ असहमति प्रकट की तथा लिखा कि इससे सिक्ख दो हिस्सों में बँट जाएंगे और वे पाकिस्तान में जाना कभी पसंद नहीं करेंगे। इस बात को मुख्य रखते हुए लार्ड माउंटबेटन ने सिक्ख नेताओं की मुस्लिम लीग नेताओं के साथ बातचीत का प्रबंध किया, ताकि सिक्ख और लीगी पाकिस्तान से सम्बन्धित किसी समझौते पर पहुँच सकें। इस उद्देश्य के लिए मिस्टर ज़िनाह और लियाकत अली खान, महाराजा पटियाला एवं आरज़ी सरकार के रक्षा मंत्री स. बलदेव सिंघ के दरमियान कई मीटिंगें हुईं। इन मीटिंगों में अन्य सिक्ख नेता भी भाग लेते रहे। उस समय सिक्खों की विशेष माँग सिक्ख स्टेट थी, इसलिए बातचीत सिक्ख स्टेट पर केंद्रित हुई। मिस्टर ज़िनाह निम्नलिखित बातें मान गया :-

१. सिक्खों की अलग स्टेट बना दी जायेगी।

२. इसकी सेना सिक्ख हो और पाकिस्तानी

फौज में सिक्ख सेना का हिस्सा नियुक्त हो।
३. यह सिक्ख स्टेट पाकिस्तान में बने और इसकी सुरक्षा, यातायात के साधन एवं विदेशी मामले पाकिस्तान के अधीन हों।
४. यह सब कुछ इस शर्त पर होगा कि सिक्ख पंजाब का विभाजन करने की माँग छोड़ दें।

स्पष्ट रूप से सिक्खों की ज्यादतर संख्या इस प्रकार से पाकिस्तान में आ जानी थी। सिक्ख मुसलमानों के सांप्रदायिक व कट्टरपंथी शासन से अनभिज्ञ नहीं थे। मार्च, १९४७ ई. से लगातार सांप्रदायिक फ़साद हो रहे थे। बहुत- से सिक्ख रावलपिंडी, मुलतान तथा अटक जिलों में मारे गए थे। सिक्खों तथा हिंदुओं के गाँवों का सफाया हो चुका था। सिक्खों की समूचे इतिहास में मुसलमानों के ज़ुल्म की कई मिसालें थीं और इस ऐतिहासिक पृष्टभूमि को भुलाना कठिन था, क्योंकि सिक्ख हर रोज़ अरदास करते थे— ''जिन्हां सिंघां सिंघणियां ने धर्म हेत सीस दित्ते, बंद बंद कटवाए, खोपरीआं लुहाईआं, चरखड़ीआं' ते चढ़े, सिक्खी सिदक केसां सवासां' नाल निभाया, तिन्हां दी कमाई का ध्यान धर के खालसा जी! बोलो जी वाहिगुरू!'' सिक्खों की किस्मत को सदा के लिए पाकिस्तान के साथ जोड़ने के लिए बहुत बड़ी हिम्मत और बड़े सबूतों की ज़रूरत थी, जिससे सिक्खों को मुसलमान नेताओं की कथनी पर विश्वास करवा दिया जाता। मुसलमानों का व्यवहार कोई धैर्य बंधाने वाला नहीं था। सिक्ख नेताओं ने मिस्टर ज़िनाह, जो मुस्लिम लीग का प्रधान था और बाद में पाकिस्तान का प्रधान बना, से लिखित में कुछ भरोसा करने लायक देने की माँग की। वह लिखित रूप से कुछ देने को तैयार नहीं था। पैडरल मून का कथन है कि बातचीत सफल न होने का एक बड़ा कारण यह भी था कि ज़िनाह मुस्लिम लीग का प्रधान सिक्खों के बारे में कुछ नहीं जानता था।

इस मसले पर मास्टर तारा सिंघ ने लेखक को बताया कि उन्होंने एक सवाल मिस्टर ज़िनाह से किया कि यह सिक्ख स्टेट यदि कभी चाहे तो पाकिस्तान में से बाहर आ सकती है कि नहीं? इसका उत्तर न में था। यह सिक्ख स्टेट कभी भी पाकिस्तान में से बाहर नहीं आ सकती थी। यह बात भी बहुत निराशाजनक थी। इस बात पर आकर सारी बातचीत टूट गई। बातचीत टूटने के और भी कई कारण थे। इससे पहले अकालियों और मुस्लिम लीग के बीच कभी भी कोई समझौता नहीं हुआ था। पंजाब का कोई भी मुसलिम लीगी सर फ़ज़ल हुसैन या सर सिकंदर ऐसी बुद्धिमत्ता रखने वाला नहीं था, जो दूरदृष्टि और राजनीतिक सूझ से काम लेकर पाकिस्तान के विषय पर सिक्खों के साथ बातचीत कर मामले को सुलझा लेता। सिक्ख-मुस्लिम तनाव के मुख्य कारणों में से एक कारण मार्च, १९४७ ई. के फ़साद थे, जिसमें कट्टरपंथी मुस्लिमानी भीड़ ने सिक्खों की भारी संख्या

को मौत के घाट उतार दिया था। किसी भी मुस्लिम लीगी नेता ने इससे सम्बन्धित खेद का एक शब्द भी प्रकट नहीं किया था। जज़्बात इतने भड़के हुए थे और तनाव इतना ज़्यादा था कि सिक्खों तथा मुसलमानों के बीच कोई समझौता होने की आशा असंभव प्रतीत होती थी।

सिक्खों की माँग पर ही पंजाब का बँटवारा हुआ और सिक्ख नेता आखिरी दम तक अधिक से अधिक इलाका पूरबी पंजाब में रखने या भारत में जीने के लिए लड़ते रहे। ज़ीरा और फ़िरोज़पुर की तहसीलें सिक्खों के प्रयत्न से ही भारत को मिलीं, जैसे कि रेखा-चित्र-घटना से स्पष्ट होता है।

रेखा-चित्र-घटना और ज़ीरा-फ़िरोज़पुर तहसीलों का भारत में आना : हदबंदी फ़ैसले के प्रकाशन से पहले, पंजाब के राज्यपाल सर एवन जैनकिन्ज़ ने वायसराय के सचिव से पंजाब हदबंदी फ़ैसले से संबंधित अग्रिम सूचना प्राप्त करने की माँग की। उसने अग्रिम सूचना से संबंधित अवश्य ज़ोर दिया होगा, क्योंकि उसने लेखकों को बताया कि बर्तानवी प्रशासकों में यह प्रथा पहले से ही चली आ रही थी कि वह ऐसे फ़ैसलों, जिनसे प्रशासन पर प्रभाव पड़े, से सम्बन्धित कर्मचारियों को अग्रिम सूचना दे दिया करते थे, ताकि वे आवश्यक प्रबंध कर सकें। सर एवन जैनकिन्ज अग्रिम सूचना मांगते समय यह भूल गया कि माँगी गई सूचना अंतरराष्ट्रीय हदबंदी से संबंधित थी और यह अब एक प्रांत की अंदरूनी समस्या नहीं रही थी, जिसका वह राज्यपाल था।

सर जॉर्ज एबेल वायसराय के सचिव थे, जिनके साथ सर एवन जैनकिन्ज़ ने टेलीफोन पर बातचीत की। ये भारत में बर्तानवी आई. सी. एस. काडर के सीनियर आफिसरों में से थे। वायसराय के सचिव के तौर पर वे गवर्नरों के साथ पत्र-व्यवहार किया करते थे। वायसराय के अमले में सर एवन जैनकिन्ज़ के उत्तराधिकारी होने के कारण उनके साथ मित्रवत सम्बन्ध थे, इसलिए सर जॉर्ज ने सर एवन जेनकिन्ज के पूछने पर हदबंदी कमीशन के सचिवालय के साथ बातचीत की और अग्रिम भेजे जाने वाले सरहद दर्शाते रेखा-चित्र प्राप्त कर एवन जेनकिन्ज को भेज दिया।

यदि हदबंदी फ़ैसले और इस रेखा-चित्र के मध्य कोई अंतर न होता तो इस नक्शे का पता ही न चलता। इस नक्शे के अनुसार फ़िरोज़पुर और ज़ीरा तहसीलें पाकिस्तान में थी और बाद में प्रकाशित हुए फ़ैसले में इन तहसीलों को भारत में दिखाया गया। सबसे पहले यह परिवर्तन पश्चिमी पंजाब के राज्यपाल सर फ्रांसिस मूडी के ध्यान में आया और तब से ही उसे निश्चय हो गया कि सर सीरिल रेडक्लिफ ने अपने मूल फ़ैसले को बदल दिया है। पाकिस्तानी नेताओं ने लार्ड माउंटबेटन पर यह दोष लगाया कि उसने पंजाब हदबंदी फ़ैसले में अदला-बदली

कराने के लिए अपना निजी रसूख इस्तेमाल किया है। इस घटना के बारे में लार्ड माउंटबेटन ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि वह इस दोष से रस्मी तैर पर इन्कार करना भी अपने गौरव के अनुकूल नहीं समझता।

अकाली नेता मास्टर तारा सिंघ और ज्ञानी करतार सिंघ ने लेखक को बताया कि सिक्खों के हक में मेजर शार्ट की दलीलबाज़ी के कारण ही हदबंदी फ़ैसला भारत के लिए लाभदायक रहा, क्योंकि मेजर शार्ट ने भी अपने बयान में इस बात की तरफ इशारा किया है, जब वह कहता है कि 'ट्रिम ए लिटिल' सिक्ख के लिए। बाउंडरी कमिशन के सेक्रेटरी ब्योमांट ने 'टाईम्ज़ न्यूयार्क' में बयान देकर सिद्ध किया है कि पंजाब के रेडक्लिफ अवार्ड में परिवर्तन किए गए हैं। इंग्लैंड में छपी पुस्तक 'इंडियाज़ रोड टू इंडीपेनडेंस' में भी स्पष्ट अंकित किया गया है कि पंजाब बाउंडरी अवार्ड में परिवर्तन किया गया है। पंजाब बाउंडरी अवार्ड में परिवर्तन किए जाने के बारे में अब किसी प्रकार के शक की गुंजाइश नहीं। अब सवाल यह उठता है कि यह परिवर्तन क्यों किया गया? दिवंगत जस्टिस हरनाम सिंघ ने लेखक को बताया था कि जब तहसील ज़ीरा और फ़िरोज़पुर के पाकिस्तान में जाने सम्बंधी पता चला तो जस्टिस हरनाम सिंघ तथा ज्ञानी करतार सिंघ ने एक मेमोरेंडम लिखा, जो मेजर शार्ट को दिया और जिसमें लिखा गया था कि सिक्खों के साथ पहले ही बहुत बेइन्साफ़ी हुई है। ये तहसीलें पाकिस्तान में नहीं जानी चाहिए। बड़े यत्न से मुझे लार्ड माउंटबेटन की एक प्राईवेट चिट्ठी, जो कि लार्ड इसमे को लिखी, मिली है, जिससे स्पष्ट होता है कि जो परिवर्तन थोड़ा-बहुत किया गया, वह सिक्खों के कारण किया गया। लार्ड माउंटबेटन ने २ अप्रैल, १९४८ ई. को लार्ड इसमे को लिखा— ''जहाँ तक मुझे याद है, मैंने रेडक्लिफ से कहा कि सिक्खों का रवैया बहुत सख़्त हो गया है, जिसकी हमें आशा नहीं थी। जब पूरबी और पश्चिमी पाकिस्तान की हदों का संतुलन करने लगो तो मुझे आशा है कि सिक्ख समस्या का ख़्याल रखोगे . . . उसे विश्वास है कि यदि पाकिस्तान को कोई दरियादिली दिखानी है तो वह बंगाल में दिखाए, क्योंकि बंगाल में सिक्ख समस्या नहीं है।'' इससे स्पष्ट है कि ज़ीरा और फ़िरोज़पुर तहसीलें भारत को सिक्खों के कारण मिलीं।

पूरबी पंजाब के बहुत हिस्से इस समय भारत में ज़्यादातर सिक्खों की निरंतर कुर्बानियों के कारण हैं। यदि सिक्ख कुर्बानियां देते हुए संघर्ष न करते तो पंजाब अठारहवीं सदी में अफगानिस्तान का हिस्सा होना था और बीसवीं सदी में पाकिस्तान का।

महान समाज सेवक : भक्त पूरन सिंह

*-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

मानवता की सेवा करना किसी सेवा-भावना रखने वाले सौभाग्यशाली के हिस्से ही आता है। इस स्वार्थ से भरे संसार में कोई दैवीय विभूति ही ऐसी होती है जो अपने भाग्य में दुखी और पीड़ित मनुष्यों की अथक सेवा लिखवा कर लाती है। भक्त पूरन सिंह ऐसे ही महान व्यक्तित्व थे जिन्होंने अपना सारा जीवन बेसहारा, दिव्यांगों, पिंगलों और अपाहिज़ों की सेवा में समर्पित कर दिया। भक्त जी की प्रसिद्धि पिंगलवाड़ा, श्री अमृतसर के संस्थापक के रूप में अमर हो चुकी है।

जन्म एवं संघर्ष भरा बचपन : भक्त जी का जन्म ४ जून, १९०४ ई. को लुधियाना ज़िले की तहसील समराला के गांव राजेवाल में हुआ। आपके पिता का नाम श्री शिब्भू मल्ल और माता का नाम माता महिताब कौर था। आपका नाम रखा गया— राम जी दास। आपकी प्रारंभिक शिक्षा गांव के ही स्कूल में हुई। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण पढ़ाई आगे जारी न रह सकी।

राम जी दास से पूरन सिंघ : भक्त जी बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे। वे धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करते रहते। आपने कुछ समय तक लुधियाना के एक मंदिर में सेवा-कार्य भी किया, परंतु मानसिक संतुष्टि नहीं मिली।

एक बार अपने गांव जाते समय आपकी भेंट दो सिक्खों से हुई। सिक्खों के प्रेम और सेवा-भाव से अभिभूत होकर आप में सिक्ख सजने की अभिलाषा जाग उठी। आप गुरुद्वारा रेरू साहिब आ गये और यहां सेवा-कार्य में निमग्न हो गये। यहीं आपने अमृत छका और राम जी दास से 'पूरन सिंघ' बन गये।

श्री डेहरा साहिब में सेवा : सन् १९३२ में भगत जी लाहौर में श्री डेहरा साहिब आ गये और सेवा करने लगे। यहां इनकी भेंट महंत गोपाल सिंघ और ग्रंथी जत्थेदार अच्छर सिंघ से हुई। भक्त जी ने उन्हें बताया कि वे दुखी मानवता की सेवा करने में ही सारा जीवन गुज़ारना चाहते हैं। भक्त जी के इतने सुन्दर विचार जानकर उन्हें गुरुद्वारा साहिब के प्रबंधकों से मिलाया गया। प्रबंधन ने आपको गुरुद्वारा साहिब में रहते हुए बेसहारा मानवता की सेवा करने की आज्ञा प्रदान कर दी।

भक्त जी सारा दिन गुरुद्वारा साहिब में जल, लंगर, सफाई, बर्तनों आदि की सेवा करते और शाम को शहर में निकल जाते। कहीं भी कोई कील, कांटा, कंकड़, पत्थर, काँच, लोहा आदि पड़ा मिल जाता तो उसे बीनते हुए चलते कि किसी के पैर में चुभ कर कष्ट न मिले। फिर लाइब्रेरी में बैठकर पढ़ना-लिखना आपकी दिनचर्या का हिस्सा था।

पिआरा सिंघ से भेंट : सन् १९३४ की बात है। कोई निर्दयी एक चार वर्ष के छोटे से अपाहिज

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

और गूंगे बालक पिआरा सिंघ को गुरुद्वारा डेहरा साहिब की दर्शनी ड्योढ़ी पर छोड़ गया। भक्त जी ने उस बालक की सेवा-संभाल करनी शुरू कर दी। आप अपनी दिनचर्या तो करते ही थे, साथ-साथ उस बच्चे को भी पीठ पर लादे फिरते। भक्त जी ने पूरे १४ वर्ष तक उस बालक की सेवा की।

देश-विभाजन और श्री अमृतसर- आगमन : सन् १९४७ में देश-विभाजन के वक्त भक्त जी पिआरा सिंघ को साथ लेकर श्री अमृतसर शहर आ गये। पहले कुछ समय खालसा कॉलेज श्री अमृतसर के कैंप में रहे और निरंतर शरणार्थियों की सेवा करते रहे। शरणार्थी कैंप समाप्त हो जाने के बाद आपने काफ़ी समय रेलवे स्टेशन के पास पेड़ों के नीचे गुज़ारा। अब तक आपके पास बेसहारा और लावारिस पीड़ितों की संख्या में अच्छी-ख़ासी वृद्धि हो चुकी थी।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की सहायता से पिंगलवाड़ा की स्थापना : कुछ समय तक भक्त जी एक बंद पड़े सिनेमा घर में पीड़ितों की देखभाल करते रहे। भक्त जी ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से दरख्वास्त की कि सेवा-कार्य के लिए एक पक्के ठिकाने का प्रबंध करा दिया जाये। भक्त जी की विनती स्वीकार कर ली गई और उसी बंद पड़े सिनेमा घर की भूमि पर पिंगलवाड़ा की इमारत का काम आरंभ हो गया।

सेवा-कार्य में रत महान संस्था : पिंगलवाड़ा : पिंगलवाड़ा अब बहुत बड़ी संस्था बन चुका है। यहां सैकड़ों बेसहारा, दिव्यांग, मंदबुद्धि स्त्री-पुरुषों का इलाज और सेवा-संभाल चलती रहती है। इन्हें न केवल भोजन मिलता है बल्कि आवश्यक दवाएं भी उपलब्ध कराई जाती हैं। भक्त जी अविवाहित रहे और सारे संसार को ही अपना परिवार मानते रहे। भक्त जी की गोद ली हुई बेटी डॉ. इंदरजीत कौर अब पिंगलवाड़ा की संचालिका हैं।

लेखन-सेवा : भक्त जी एक श्रेष्ठ लेखक भी थे। गुरमति की शिक्षाओं को जनभाषा में आम लोगों तक पहुंचाना आपके जीवन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है। आपने अनेक ट्रेक्ट (पुस्तिका), संदेश, इश्तिहार, पोस्टर, पुस्तकें आदि छापकर नि:शुल्क बांटी। इनमें गुरबाणी, गुरु-इतिहास, गुरमुख जीवन, विभिन्न सामाजिक मुद्दों, प्रदूषण आदि के विषयों पर सारगर्भित चर्चा छपी होती थी।

पद्मश्री से सम्मानित और सम्मान-वापसी : भक्त जी के महान सेवा-कार्यों को स्वीकृति देने के लिए १९७९ ई. में आपको पद्मश्री पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया, लेकिन १९८४ ई. में श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब पर हुए फौज़ी हमले के विरोध में आपने यह पुरस्कार लौटा दिया।

भक्त जी का अकाल चलाणा : भक्त पूरन सिंघ का देहांत ५ अगस्त, १९९२ ई. को ८८ वर्ष की आयु में हुआ। आपकी तस्वीर केंद्रीय सिक्ख अजायब घर में सुशोभित है। संस्था पिंगलवाड़ा को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की ओर से एक निश्चित राशि निरंतर दी जाती है।

आधुनिक युग के भाई घन्हईआ जी कहे जाने वाले भक्त पूरन सिंघ के आरंभ किये सेवा-कार्य आज भी उसी उत्साह के साथ जारी हैं।

बाणी बिरलउ बीचारसी

*-डॉ. परमजीत कौर**

गुरु साहिबान ने लोगों को अज्ञानता के अन्धकारपूर्ण एवं संकीर्ण मार्ग से हटाकर ज्ञान के प्रकाशमयी तथा विशाल मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया था, मगर आज जनसाधारण में गुरु साहिबान द्वारा निर्दिष्ट मार्ग की पकड़ ढीली हो गयी है। ज्ञान का प्रकाश होते हुए भी मनुष्य उचित रास्ते से भटक गया है। उसके जीवन में नैतिक मूल्यों तथा आदर्शों का कोई स्थान दिखायी नहीं देता। प्रेम, सच्चाई, एकता, विनम्रता तथा भ्रातृ-भावना के स्थान पर वैर-विरोध, छल-कपट, झूठ, नफरत एवं ईर्ष्या का बोलबाला है। युवा वर्ग असंतुष्टता, रोष, निराशा के कारण अनुचित मार्ग पर चल पड़ा है। नशों के सेवन से जीवन विकारग्रस्त होता जा रहा है। अहंकार तथा झूठी प्रतिष्ठा-प्राप्ति के चक्कर में फंसकर अपने आप को गुरु का सिक्ख कहलवाने वाला जीव भीड़ का हिस्सा बन गया है। उसका न्यारापन कहीं दिखायी नहीं देता। प्रतिदिन बढ़ते हुए मानसिक तनाव, सदाचारक गिरावट तथा आत्मिक पतन का कारण है— गुरबाणी को विचार कर, गुरमति अनुसार जीवन बनाने का यत्न न करना। गुरबाणी के अर्थबोध के बिना गुरमति का ज्ञान नहीं होता। गुरमति के ज्ञान के अभाव में मनुष्य कई बार दुर्मति के अधीन हुआ मोह-माया में लिप्त मन के पीछे चलने वालों का अनुकरण करने लगता है तथा पशु-वृत्ति को धारण कर लेता है :

दुबिधा दुरमति अधुली कार॥
मनमुखि भरमै मझि गुबार॥१॥
मनु अंधुला अंधुली मति लागै॥
गुर करणी बिनु भरमु न भागै॥१॥रहाउ॥
मनमुखि अंधुले गुरमति न भाई॥
पसू भए अभिमानु न जाई॥ (पन्ना ११९०)

गुरबाणी की विचार न करने वाला मनमुख ज्ञान की बातें तो करता है, लेकिन उसके अंदर आत्मिक जीवन की सूझ नहीं होती। उसका सारा जीवन दुविधा, भ्रम तथा दुख में व्यतीत हो जाता है :

न सबदु बूझै न जाणै बाणी॥
मनमुखि अंधे दुखि विहाणी॥ (पन्ना ६६५)

गुरु साहिब विस्तार से समझा रहे हैं कि मैं बड़ा हूं, मैं सबसे महान बन जाऊं, यह अहं की चउपड़ (खेल) सारा जगत खेल रहा है। इस

**६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६*

खेल में लगकर जीवन की बाजी हार रहा है, केवल वही मनुष्य विजयी होता है जो गुरु के शबद को अपने विचार-मण्डल में टिकाता है :

— हउमै चउपड़ि खेलणा झूठे अहंकारा ॥
सभु जगु हारै सो जिणै गुर सबदु वीचारा ॥
(पन्ना ४२२)

— गुर ते मुहु फेरे जे कोई
गुर का कहिआ न चिति धरै ॥
करि आचार बहु संपउ संचै
जो किछु करै सु नरकि परै ॥ (पन्ना १३३४)
— मनमुख भूले पचि मुए उबरे गुर बीचारि ॥
जि पुरखु नदरि न आवई
तिस का किआ करि कहिआ जाइ ॥
(पन्ना ९३७)

प्राय: मनमुख भी बाणी पढ़ता है, पढ़कर सुनाता भी है, मगर वो जो बोल रहा होता है, उसकी विचार खुद नहीं करता :

मानुखु कथै कथि लोक सुनावै
जो बोलै सो न बीचारे ॥ (पन्ना ९८१)

जो मनुष्य गुरबाणी के अर्थबोध के बिना जीवन व्यतीत करता है, उनका नित्य का जीवन प्रतिदिन पढ़ने वाली बाणी में निर्दिष्ट आदर्शों के साथ मिलता नहीं है। गुरबाणी की विचार के बिना, गुरबाणी में बताए गए मार्ग के अनुसार जीवन बनाए बिना गुरबाणी का रटन-मात्र कर्मकाण्ड बन कर रह जाता है तथा वह फल प्राप्त नहीं होता जो होना चाहिए। मन सदा दुविधाग्रस्त रहता है, भटकता रहता है। शारीरिक सुख-सुविधाओं के होते हुए भी मनुष्य सुखी प्रतीत नहीं होता :

सुणि सिखिऐ सादु न आइओ
जिचरु गुरमुखि सबदि न लागै ॥ (पन्ना ५९०)

अहंकार, डगमगाती श्रद्धा, असंतुष्टि तथा दुर्मति के कारण परमात्मा के सामीप्य का बोध नहीं होता। परमात्मा के साथ दूरी का एहसास बढ़ता जाता है। यह दूरी तब कम होती है जब मनुष्य परमात्मा की कृपा से, सतिगुरु के शबद की सहायता से मन के विकारों से मुक्ति प्राप्त कर ले, उसके विकारग्रस्त जीवन का संताप दूर हो जाए।

गुरबाणी की विचार न करने के परिणाम बहुत घातक हो रहे हैं। आज सिक्ख समाज वहम-भ्रम तथा कोरे कर्मकाण्ड के पंजे में कैद होता जा रहा है। गुरु जी का आदेश है :

— साहा गणहि न करहि बीचारु ॥
साहे ऊपरि एकंकारु ॥ (पन्ना ९०४)
— थिती वार सेवहि मुगध गवार ॥
(पन्ना ८४३)
— सगुन अपसगुन तिस कउ लगहि
जिसु चीति न आवै ॥ (पन्ना ४०१)

गुरु साहिबान के स्पष्ट आदेशों के विपरीत नित्य के कार्य-व्यवहार में दिखावा-मात्र वाली रीतियां बढ़ती जा रही हैं। प्रतिदिन गुरबाणी का पाठ करने वाले सगुन-अपसगुन, दिन-मुहूर्त

आदि के चक्रव्यूह में फंसे हुए हैं। गुरबाणी की विचार न करना तथा गुरु के वचनों पर पूर्ण विश्वास न होना ही इस अज्ञानता का कारण है। श्री गुरु नानक देव जी ने जगन्नाथपुरी के मन्दिर में आरती कर रहे पण्डितों को समझाया था कि सारी सृष्टि में परमात्मा की आरती सदा हो रही है। आकाश रूपी थाल में सूर्य एवं चंद्रमा रूपी दीपक हैं तथा सारे तारे मानों मोतियों के समान थाल में सुशोभित हैं। मलय पर्वत से आती हुई वायु मानों धूप जल रहा है :

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक
बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे
सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१ ॥
कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती ॥
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥ *(पन्ना ६६३)*

गुरबाणी की विचार की कमी ही है कि आज भी कई घरों तथा गुरुद्वारों में थाल में दीपक जलाकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सामने थाल घुमाकर जगन्नाथपुरी के मन्दिर की रीति के समान आरती की जाती है तथा थाल को घुमाते हुए वही शबद पढ़ा जाता है जिस शबद द्वारा गुरु जी ने पण्डितों को समझाया था और इस प्रकार की आरती का खण्डन करते हुए परमात्मा की कुदरती आरती का समर्थन किया था।

श्री गुरु नानक देव जी ने श्राद्ध करने वालों पर करारी चोट करते हुए कहा है कि यदि कोई मनुष्य चोरी-ठगी आदि द्वारा कमाया हुआ धन तथा पदार्थ अपने पितरों को अर्पित करता है और यदि उनके द्वारा अर्पण किया गया धन-पदार्थ आदि वास्तव में पितरों तक पहुंच जाता है तो परलोक में वह धन-पदार्थ आदि पहचान लिया जायेगा तथा ऐसे में चोरी का माल रखने के दोष में पितर भी चोर कहे जाएंगे :

जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ॥
अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ ॥
(पन्ना ४७२)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु मानने वाले गुरसिक्खों को गुरबाणी को समझने तथा विचार करने की आवश्यकता है तभी जीवन सफल हो सकता है। श्री गुरु नानक देव जी समझा रहे हैं कि सतिगुरु की बाणी ऐसी है कि इसकी विचार से मनुष्य स्वस्वरूप में टिक जाता है। कोई विरला ही जन सतिगुरु की बाणी को विचारता है :

बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुखि होइ ॥
इह बाणी महा पुरख की निज घरि वासा होइ ॥
(पन्ना ९३५)

सतिगुरु की मति ही मानव जीवन के लिए श्रेष्ठ रास्ता है। जो मनुष्य गुरबाणी की विचार करके गुरबाणी के अनुसार अपना जीवन बनाता है, उसको परमात्मा पर विश्वास हो जाता है, उसका अहंकार समाप्त हो जाता है, वह दुविधा में डालने वाली अपनी दुर्मति त्याग देता है तथा कामादि पांच शत्रुओं के मुकाबले

अपने मन को मजबूत बनाने का यत्न करता रहता है। उसका जीवन पवित्र हो जाता है। गुरु साहिबान द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलते हुए यदि परमात्मा के सिमरन में मन लगाया जाए तो मन माया के कारण भटकना छोड़ देता है :

गुरमुखि होवै सु गिआनु ततु बीचारै
हउमै सबदि जलाए ॥
तनु मनु निरमलु निरमल
बाणी साचै रहै समाए ॥ *(पन्ना ९४६)*

जब प्रभु के अस्तित्व के बारे में विश्वास दृढ़ हो जाता है तो हृदय में प्रभु का प्रेम पैदा हो जाता है, तीर्थ आदि पर जाने की आवश्यकता महसूस नहीं होती— *''आतमे नो आतमे दी प्रतीति होइ ता घर ही परचा पाइ ॥''* जब विश्वास प्रबल हो जाता है तो परमात्मा ही साथी, मित्र, प्रियतम आदि लगता है। गुरु साहिब समझाते हैं कि यदि बाणी के विचार के द्वारा प्रभु का प्रेम-संदेश सुना जाए तो प्रभु का सामीप्य हमेशा के लिए मिल जाता है :

सचे संदा सदड़ा सुणीऐ गुर वीचारि ॥
(पन्ना १०१५)

वैसे तो प्रत्येक मनुष्य कह देता है कि परमात्मा सर्वत्र मौजूद है, लेकिन इस सच्चाई की समझ तभी आती है जब गुरबाणी की विचार के फलस्वरूप अंदर से अहं दूर हो जाए। गुरमति के अनुसार जीवन बनाते हुए प्रभु का नाम-सिमरन करने से मन सदा प्रफुल्लित रहता है, लोकदिखावे की भावना समाप्त हो जाती है। परमात्मा का नाम अमूल्य है। यह किसी सांसारिक कीमत से नहीं मिलता। नाम की प्राप्ति के लिए गुणों का सरमाया एकत्र करना पड़ता है। यह गुरु से, गुरबाणी की विचार की बरकत से मिलता है :

— मोलि कित ही नामु पाईऐ नाही
नामु पाईऐ गुर बीचारा ॥ *(पन्ना ७५४)*
— गुर सबदु बीचारहि आपु जाइ ॥
साच जोगु मनि वसै आइ ॥ *(पन्ना ११९०)*
— लाहा हरि धनु खटिआ
गुरमुखि सबदु वीचारि ॥ *(पन्ना ३००)*

संक्षेप में कहा जा सकता है कि जीवन में फैला हुआ अज्ञानता का अन्धकार, सदाचारक गिरावट, दुख-दर्द, भ्रम-भटकना तथा अपवित्रता को दूर करने का यही तरीका है कि गुरबाणी का पाठ करने व सुनने के साथ-साथ गुरु-शबद की विचार भी की जाए तथा उसमें निर्दिष्ट मार्ग पर चला जाए। प्रतिदिन यदि एक गुरु-शबद की विचार कर उसमें बताए जीवन-मूल्यों को जीवन में धारण करने का नियम बना लिया जाए तो जीवन सुखी हो सकता है। श्री गुरु नानक देव जी के इस उपदेश को सदा याद रखना चाहिए :

गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥
गुर की करणी काहे धावहु ॥
नानक गुरमति साचि समावहु ॥ (पन्ना ९३३)

गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै . . .

*-डॉ. मनजीत कौर**

समूची मानवता की रहनुमाई करने वाले, लोक-परलोक को सहज ही सफल बनाने वाले, पारब्रह्म स्वरूप, शबद-गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी सर्वधर्म समन्वय के प्रतीक मनुष्य-मात्र के सर्वसाझे गुरु हैं। इस पावन ग्रंथ की बाणी ईश्वर के दरबार से आई है, जिसका पुख्ता प्रमाण पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी से मिलता है :

परमेसरि दिता बंना ॥
दुख रोग का डेरा भंना ॥
अनद करहि नर नारी ॥
हरि हरि प्रभि किरपा धारी ॥१ ॥
संतहु सुखु होआ सभ थाई ॥
पारब्रहमु पूरन परमेसरु
रवि रहिआ सभनी जाई ॥ रहाउ ॥
धुर की बाणी आई ॥
तिनि सगली चिंत मिटाई ॥
दइआल पुरख मिहरवाना ॥
हरि नानक साचु वखाना ॥ *(पन्ना ६२७)*

इस शबद में सर्वकला समर्थ अकाल पुरख वाहिगुरु का सबको आसरा देने वाले रक्षक के रूप में, समस्त दुखों का समूल विनाश करने वाले के रूप में गुणगान किया गया है, जो सबको आनंद प्रदान करने वाला है तथा सर्वव्यापी है। साथ ही इस पावन ग्रंथ की आलौकिक बाणी के संदर्भ में इस तथ्य को भी उजागर किया गया है कि यह बाणी प्रभु के दरबार से प्राप्त हुई है और इसने समस्त चिंताओं से मुक्त कर दिया है।

जब सिद्धों ने श्री गुरु नानक देव जी से प्रश्न किया कि आपका गुरु कौन है और आप किसके शिष्य हो, तो श्री गुरु नानक देव जी का इस संदर्भ में दिया गया जवाब ही प्रत्यक्ष रूप से शबद-गुरु की प्रौढ़ता करता है। गुरु जी सिद्धों के प्रश्न का जवाब इस प्रकार देते हैं :

सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ *(पन्ना ९४३)*

अर्थात् मेरा गुरु शबद है और शबद में सुरति का लगातार लीन रहना ही उसका शिष्य होना है। प्रभु के शबद में सुरति का निरन्तर जुड़ाव ही शबद रूपी परमेश्वर का शिष्य होना है।

इस जवाब से यह भी तथ्य स्वत: स्पष्ट हो जाता है कि श्री गुरु नानक देव जी भी 'शबद' को ही अपना गुरु मानते थे। गुरु पातशाह 'धुर

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

की बाणी' के उच्चारणकर्ता हैं और इस पावन बाणी में समूल चिन्ताओं, दुखों, संतापों से मुक्त करने की क्षमता है। इलाही रंगों में रंग कर अकाल पुरख वाहिगुरु के चरणों में सुरति को टिका कर श्री गुरु नानक देव जी जब बाणी उच्चारण करने लगते तब भाई मरदाना जी को बड़े प्यार से कहते— *''मरदानिआ, रबाब छेड़, बाणी आई ए!''* इस कथन से यह गहन तथ्य उजागर होता है कि बाणी श्री गुरु नानक देव जी के अन्त:स्थल पर उतरती और रसना उसका उच्चारण करती।

'गुरु' शब्द दो अक्षरों के योग से बना है— गु+रु। 'गु' अर्थात् अन्धकार, 'रु' अर्थात् प्रकाश। 'गुरु' का शाब्दिक अर्थ हुआ— जो अन्धकार से प्रकाश, अज्ञान से ज्ञान तथा नश्वरता से अमरता की ओर ले जाए। इस सन्दर्भ में गुरबाणी में अनेक उदाहरण मिलते हैं।

श्री गुरु नानक देव जी ने 'मूल-मंत्र' का उच्चारण किया, जिसे सिक्ख धर्म में 'बीज-मंत्र' भी कहा जाता है। इसमें गुरु पातशाह ने 'ੴ' से प्रारम्भता कर प्रभु के अनंत गुणों का जिक्र किया है और अन्त में 'गुर प्रसादि' कह कर स्पष्ट किया है कि अनंत गुणों के मालिक परमात्मा को गुरु-कृपा द्वारा ही पाया जा सकता है।

गुरु पातशाह ने गुरु की मध्यस्था को अनिवार्य माना है। जितना जीव के चिन्तन में 'गुर प्रसादि' अर्थात् गुरु-कृपा का भाव दृढ़ रहेगा उतनी अहंकार से दूरी और निरंकार से निकटता का सम्बध बना रहेगा। गुरबाणी आशयानुसार बाहरी अनंत प्रकाश होने के बावजूद भी अन्त:करण में पूर्ण गुरु के बिना अज्ञानता का अंधकार छाया रहता है। श्री गुरु अंगद देव जी का इस सन्दर्भ में फरमान है :

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥
एते चानण होदिआं गुर बिनु घोर अंधार ॥

(पन्ना ४६३)

अर्थात् यदि सौ चन्द्रमा भी आकाश में उदित हो जाएं और हजार सूर्य भी निकल आएं तब भी गुरु बिना अंधकार ही अंधकार है अर्थात् इतना प्रकाश होने के बावजूद भी गुरु के बिना जीवन में अंधेरा ही अंधेरा है।

यही नहीं, गुरबाणी में तो यहां तक आगाह किया गया है कि गुरु के बिना घोर अंधकार तो है ही, साथ ही गुरु के बिना जीवन-युक्ति की समझ भी सम्भव नहीं। गुरु के बिना सुरति, सिद्धि और मुक्ति कुछ भी मुमकिन नहीं :

गुर बिनु घोरु अंधारु गुरू बिनु समझ न आवै ॥
गुर बिनु सुरति न सिधि
गुरू बिनु मुकति न पावै ॥ *(पन्ना १३९९)*

श्री गुरु रामदास जी का इस संदर्भ में फरमान है :

बाणी गुरू गुरू है बाणी

विचि बाणी अंम्रितु सारे॥
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै
परतखि गुरू निसतारे॥ (पन्ना ९८२)

गुरु पातशाह के चिन्तनानुसार बाणी (शबद) ही गुरु है और गुरु ही बाणी (शबद) है। इस शबद रूपी बाणी में ही अमृत समाया है। गुरु शबद रूपी बाणी का उच्चारण करता है, जिसे (सच्चा) सेवक स्वीकार करता है और ऐसे सेवक का ही गुरु प्रत्यक्ष रूप से उद्धार कर देता है।

गुरबाणी गुरु के मुखारबिंद से उच्चरित इलाही बाणी है। बाणी और गुरु एक रूप हैं। इस अमृतमयी बाणी को ही प्रत्यक्ष गुरु मान कर, इससे दिशा-निर्देश लेकर संसार रूपी भवसागर से सहजता से पार उतरा जा सकता है। समर्थ गुरु ईश्वर की अपार कृपा से मिलता है :

पूरै भागि सतिगुरु पाईऐ
जे हरि प्रभु बखस करेइ॥ (पन्ना ८५१)

इस संदर्भ में श्री गुरु अरजन देव जी का पावन फरमान है कि पूर्ण गुरु की प्राप्ति से ही, जीवन में सभी दायित्वों का सुचारू रूप से निर्वाह करते हुए, हंसते-खेलते, खाते-पीते अर्थात् सही जीवन-जाच से ही मुक्ति प्राप्त की जा सकती है :

नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति॥
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ
विचे होवै मुकति॥ (पन्ना ५२२)

गुरबाणी हमें कर्मकाण्डी मार्ग बताने वाले मायाधारी पाखण्डी गुरुओं से सतर्क करती है। इस संदर्भ में भक्त कबीर जी का फरमान है :

कबीर सिख साखा बहुते कीए
केसो कीओ न मीतु॥
चाले थे हरि मिलन कउ
बीचै अटकिओ चीतु॥ (पन्ना १३६९)

अर्थात् हे कबीर! तुमने अपने शिष्य और सेवक तो बहुत-से बना लिए, परंतु तुमने प्रभु को अपना मित्र नहीं बनाया। तुम चले तो थे प्रभु से मिलने के लिए, परंतु यह तुम्हारा चित्त (हृदय) बीच रास्ते में ही अपने शिष्यों-सेवकों में अटक गया। जो मार्गदर्शक (गुरु) स्वयं ही ईश्वर-प्रीति से वंचित हैं, वे दूसरों को नाम रूपी अमृत नहीं बांट सकते। दूसरे शब्दों में, जो मार्गदर्शक अंधा हो अर्थात् अज्ञानी हो, वह किसी का मार्गदर्शक नहीं हो सकता। श्री गुरु नानक पातशाह का फरमान है :

गुरू जिना का अंधुला चेले नाही ठाउ॥
बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ
बिनु नावै किआ सुआउ॥ (पन्ना ५८)

श्री गुरु नानक देव जी का पावन संदेश है कि यदि सतिगुरु प्राप्त हो जाए तो विचार रूपी रत्न प्राप्त हो जाता है। यदि अपना मन गुरु के सम्मुख अर्पण कर दिया जाए तो सबसे प्रेम

करने का भाव बनता है, मुक्ति-प्रदाता नाम प्राप्त होता है, अवगुणों एवं विकारों से छुटकारा मिलता है। गुरु की महत्ता को दृढ़ करवाते हुए गुरु पातशाह प्रमाण देते हुए फरमान करते हैं कि हे भाई! बेशक ब्रह्मा, नारद, वेद व्यास आदि किसी से भी पूछ लो, गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता :

सतिगुरु पूरा जे मिलै पाईऐ रतनु बीचारु ॥
मनु दीजै गुर आपणे पाईऐ सरब पिआरु ॥...
पूछहु ब्रहमे नारदै बेद बिआसै कोइ ॥
(पन्ना ५९)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बेशक छः गुरु साहिबान की बाणी दर्ज है, लेकिन श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दस गुरु साहिबान की पावन ज्योति शबद रूप में समाहित है। इसका पुख्ता प्रमाण अरदास में मौजूद है :

''दसां पातशाहीआं दी जोत श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दे पाठ दीदार दा धिआन धर के बोलो जी वाहिगुरु!''

श्री गुरु अमरदास जी ने इस तथ्य को इस प्रकार समझाया है :

एका जोति जोति है सरीरा ॥
सबदि दिखाए सतिगुरु पूरा ॥ (पन्ना १२५)

शबद के अनुरूप आचरण बनाना एक प्रकार की अनोखी साधना है, जो शबद-गुरु के दर्शाए मार्ग पर चलकर ही मुमकिन है। जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक पातशाह का पावन फरमान है :

घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥
जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥
नानक नदरी नदरि निहाल ॥ (पन्ना ८)

कैसा अजब संयोग है कि जिस जीव पर परमेश्वर की कृपा होती है, उसे ही जीवन में पूर्ण गुरु की प्राप्ति होती है और पूर्ण गुरु के मार्गदर्शन द्वारा ही परमेश्वर से मिला जा सकता है।

हम भाग्यशाली हैं कि हमें शबद-गुरु से दिशा-निर्देश लेकर जीवन में विचरण करने का समय प्राप्त हुआ है। आवश्यकता है तो इस पावन बाणी को पढ़-सुन कर हृदय में बसाने की, अमल में लाने की। जो इस बाणी को पढ़-सुन कर, प्रभु के गुणों को प्रेम-भाव से हृदय में बसाता है, गुरु-कृपा से वह समस्त दुखों, संतापों, चिन्ताओं से मुक्त हो जाता है तथा सदैव स्थिर व सहज अवस्था में विचरण करता है।

खबरनामा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कनिष्ठ उपाध्यक्ष प्रिं. सुरिंदर सिंघ का निधन बड़ी पंथक हानि : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर : १४ जून : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कनिष्ठ उपाध्यक्ष प्रिंसिपल सुरिंदर सिंघ के निधन पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने गहरा शोक व्यक्त किया है। एडवोकेट धामी ने कहा कि प्रिंसिपल सुरिंदर सिंघ की पंथक और धर्म प्रचार सेवाओं को हमेशा याद रखा जायेगा। उन्होंने कहा कि पूरा जीवन सिक्खी प्रचार को समर्पित करने वाली शख्सियत के चले जाने से बड़ी पंथक हानि, हुई है। एडवोकेट धामी ने कहा कि एक सिक्ख स्कॉलर के तौर पर अपनी पहचान बनाने के साथ-साथ प्रिंसिपल सुरिंदर सिंघ ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रशासनिक कार्यों में भी अहम भूमिका निभाई है। वे संस्था की चढ़दी कला के लिए श्रेष्ठ परामर्श देते थे। प्रिंसिपल सुरिंदर सिंघ के निधन पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. रघूजीत सिंघ (विर्क), महासचिव जत्थेदार करनैल सिंघ पंजोली सहित कई पंथक शख़्सियतों ने भी शोक व्यक्त किया।

इस दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय सरदार तेजा सिंघ समुंदरी हाल में प्रिंसिपल सुरिंदर सिंघ के निमित्त शेक सभा आयोजित की गई, जिसमें मूल-मंत्र और गुरु-मंत्र का जाप कर बिछड़ी रूह को श्रद्धाँजलि भेंट की गई। शेक सभा के बाद शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय में अवकाश घोषित कर दिया गया।

अफगानिस्तान में गुरुद्वारा करते-प्रवान में हुए हमले की शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने सख़्त शब्दों में की निंदा

श्री अमृतसर : १८ जून : अफगानिस्तान की राजधानी काबुल के गुरुद्वारा करते-प्रवान में आतंकवादियों द्वारा किये गए हमले की शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने सख़्त शब्दों में निंदा की है। उन्होंने भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री श्री अमित शाह और विदेश मंत्री डॉ. एस. जय शंकर को ईमेल भेज अपील की कि वे अफगानिस्तान में रह रहे सिक्खों की सुरक्षा के लिए तुरंत ठोस कदम उठाएं और उन्हें भारत लाकर बसाने के लिए प्रयास तेज किए जाएं। एडवोकेट धामी ने कहा कि अफगानिस्तान में इससे पहले भी सिक्खों पर कई बार हमले हो चुके हैं और वहां बसते सिक्खों की मुश्किलों में निरंतर वृद्धि हो रही है, जिस कारण सिक्खों में चिंता और भय का माहौल है। उन्होंने कहा

कि सिक्खों ने जिस भी देश में निवास किया है, वहाँ के विकास और ख़ुशहाली के लिए कठिन प्रयास किये हैं। सिक्खों ने अपने गुरु साहिबान की शिक्षाओं पर चलते हुए प्रत्येक के साथ सहयोग करने की रिवायत कायम रखी है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी ने कहा कि अफगानिस्तान में कई ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान मौजूद हैं और सदियों से सिक्ख वहां बस रहे हैं, परंतु कुछ कट्टर सोच वाले लोग सिक्खों के इतिहास, रिवायतों, परंपराओं और प्रेरणाओं को भूल कर सिक्खों को निशाना बना रहे हैं, जो किसी प्रकार भी जायज नहीं है। एडवोकेट धामी ने कहा कि दो दिन पहले ही शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिष्टमंडल ने भारत के अल्पसंख्यक कमिशन के चेयरमैन के साथ मुलाकात कर अफगानिस्तान में फंसे सिक्खों को भारत लाने और इससे पहले आए सिक्खों को यहाँ पक्के तौर पर बसाने के लिए आग्रह किया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि अफगानिस्तान में बसे सिक्खों को लेकर पूरी सिक्ख कौम चिंता में है और सरकार को भी सिक्खों की सुरक्षा के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए। एडवोकेट धामी ने संयुक्त राष्ट्र से भी अपील की है वह अफगानिस्तान में सिक्खों की सुरक्षा यकीनी बनाने के लिए पहलकदमी करे।

बेअदबी के दोषियों को मिले उम्र कैद जैसी सख़्त सज़ा : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर : ८ जुलाई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने भूत काल में घटित बेअदबी की घटनाओं में दोषी लोगों को सख़्त सज़ा देने का समर्थन करते हुए मोगा ज़िले के गाँव मल्लके में सन् २०१५ में हुई बेअदबी की घटना के दोषी डेरा प्रेमियों को अदालत द्वारा सज़ा देने का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि बेअदबी के संगीन जुर्म में शामिल लोगों को उम्र कैद जैसी सज़ा होनी चाहिए, ताकि ऐसा करने की किसी की हिम्मत न हो। एडवोकेट धामी ने कहा कि गांव मल्लके में हुई बेअदबी के मामले में डेरा सिरसा से सम्बन्धित लोगों की भूमिका स्पष्ट हुई है। इसी तरह बुर्ज जवाहर सिंघ वाला तथा बरगाड़ी बेअदबी मामले में भी सिट की रिपोर्ट ने डेरा सिरसा प्रमुख और उसके पैरोकारों को नंगा किया है। उन्होंने कहा कि जांच रिपोर्ट के अनुसार डेरा सिरसा प्रमुख के ख़िलाफ़ भी कड़ी कार्यवाही होनी चाहिए।

एडवोकेट धामी ने कहा कि सरकार को डेरा प्रमुख को गिरफ़्तार करने के लिए आवश्यक प्रक्रिया पूरी कर कार्यवाही आगे बढ़ानी चाहिए, ताकि सिक्ख संगत को इन्साफ मिल सके। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने सरकार से माँग की कि धार्मिक ग्रंथों की बेअदबी के मामलों में इन्साफ जल्द मिलना चाहिए और सज़ा भी मिसाली होनी चाहिए। उन्होंने सरकार से माँग की कि बेअदबी से संबंधित मामलों में उम्र कैद की सज़ा का प्रावधान किया जाये।

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2020-22 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2020-22

GURMAT GYAN

August 2022

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

गुरुद्वारा श्री रामसर साहिब, श्री अमृतसर साहिब

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh

Date: 7-8-2022